B.A. Sanskrit
Year – I
Semester – II
Paper - I

हिन्दी – २
Hindi - 2

Centre for Distance and Online Education

श्रीचन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वतीविश्वमहाविद्यालयः

Sri Chandrasekharendra Saraswathi Viswa Mahavidyalaya

Deemed to be University u/s 3 of UGC Act 1956 - Accredited with 'A' grade by NAAC

Enathur, Kanchipuram 631561.

Sponsored and run by Sri Kanchi Kamakoti Peetam Charitable Trust

Chief Editor
Prof. Dr. G. Srinivasu
Vice-Chancellor, SCSVMV

General Editor
Dr. B. Balaji Srinivasan
Director, CDOE

Programme Co-ordinator
Dr. Debajyoti Jena

Additional Co-ordinator
1. Dr. R. Naveen (Academic)
2. Dr. M. Senthil Kumaran (Technical)

Course Co-ordinator
Dr. R. Naveen

Course Writer
Dr. D. Nageswara Rao

Assistants
R.K. Pirakas
S. Vasudevan
S.V. Kalpavalli

© SCSVMV Deemed University, June 2024
All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph any other means, without permission in writing from the below mentioned centre
Further information on the SCSVMV ODL Programmes may be obtained from
Centre for Distance and Online Education (CDOE)
Sri Chandrasekharendra Saraswathi Viswa Mahavidyalaya,
Enathur,Kanchipuram-631561.
Tamil Nadu, India
Phone: 044 – 2726 4301; Mail Id: onlineprograms@kanchiuniv.ac.in ;

शुभाभिनन्दनानि

संसकृतवाङ्मयाध्ययननिरतानां समेषां विद्यार्थिनां श्रीचन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती विश्वमहाविद्यालयेन काञ्चीपुरस्थेन सञ्चाल्यमाने दूरविद्याकेन्द्रे भागं ग्रहीतुं सादरं स्वागतम्। विश्वविद्यालयोऽयं राष्ट्रियमूल्याङ्कनप्रत्यायनपरिषदा (NAAC) 'A' श्रेण्यां प्रमाणीकृतः एवं विश्वविद्यालयानुदानायोगेन (UGC) सङ्घटनेन दूरविद्याकेन्द्रत्वेन अनुमतः वर्तते।

विश्वमहाविद्यालयोऽयं १९९३ वर्षे भारतसर्वकारद्वारा प्रकटितः तदारभ्य प्रतिवर्षं विद्याध्यापनक्षेत्रे तथा परिशोधनकार्ये च महतीं समुन्नतिं प्रदर्शयन् वर्धमानः अस्ति। भारतीयपरम्परायां प्राचीनानां ऋषीणां पण्डितानां तथा कवीनां च योगदानं मानवस्य सर्वाङ्गीनविकासाय तथा लोकपरिरक्षणाय च ज्ञानगङ्गां निरन्तरतया प्रवाहयति। नैकानि शास्त्राणि तत्र वर्तन्ते। वेदाः चत्वारः, उपवेदाः, उपनिषदः, षडङ्गाणि, षड्दर्शनानि, अष्टादशपुराणानि, इतिहासौ, धर्मशास्त्रं, काव्यानि, चतुःषष्टिकलाः इत्यादिना ज्ञानपरम्परा अनन्ता सति बहुभ्यः युगेभ्यः लोकस्य मार्गदर्शनं करोति।

प्रकृतेऽस्मिन् काले पाश्चात्यविज्ञानस्य प्रभावेन भारतीय ज्ञानदीपस्य प्रकाशः ह्रासतामेति। आधुनिकविज्ञानद्वारा समाजस्य लाभः विद्यते एव। तथापि अस्मदीयं वाङ्मयं तु न विस्मरणीयं परित्याज्यं च। भारतीयानाम् अनुभवे आचरणे च विद्यामाना योगविद्या प्रपञ्चे सर्वैरपि आद्रियमाना दृश्यते। एवम् आयुर्वेदादयः अपि। अतः अधुनातनविज्ञानेन साकं प्राचीनविज्ञानस्य संयोजनद्वारा प्रपञ्चस्य महानुपयोगः भवति। अनयैव धिया श्रीकाञ्ची कामकोटिपीठाधिपैः प्राचीन-नवीन विद्ययोः संमेलनाय विश्वमहाविद्यालयोऽयं संस्थापितः। तदिदं लक्ष्यम् अग्रे सारयति अध्यापनेन परिशोधनेन च।

श्रीचन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती विश्वमहाविद्यालयः स्वीयेप्राङ्गने बहुविधाः विद्याः बोधयन् दूरस्थानां जिज्ञासूनामपि लाभाय केन्द्रमिदं प्रचालयति। एतत् द्वारा विद्यार्थिनः लाभं लभन्तामिति आशास्महे।

Vice chancellor

Sri Chandrasekharendra Saraswati Viswa Mahavidyalaya

Enathur, Kanchipuram

कुलपति की ओर से..

ऑनलाइन एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से हिंदी को एक विषय के रूप में पढने के लिए जिन विद्यार्थियों ने पंजीकृत किया है, उन सभी का कांचीपुरम् स्थित श्री चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती मानित विश्वविद्यालय की ओर से हार्दिक स्वागत है। विश्वविद्यालय राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) - के द्वारा A श्रेणी से प्रमाणित है तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) के दूरस्थ शिक्षा केन्द्र की अनुमति प्राप्त है। 1993 में मानित विश्वविद्यालय के रूप में भारत सरकार के द्वारा घोषित किये जाने के पश्चात् विश्वविद्यालय ने उच्च शिक्षा एवं शोधकार्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हासिल की है और आगेच के पथ पर अग्रसर है।

हिंदी भारतीय भाषा-समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है और इसका राष्ट्रीय एकता में महत्वपूर्ण योगदान है। भारत एक विविधताओं और भाषाओं का देश है, जिसमें अनेकता में एकता को साधने के लिए हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान है। हिंदी भारतीय संविधान की राजभाषा है और इसे राष्ट्रीय भाषा के रूप में भी माना जाता है। यह कहना अत्युक्ति नहीं कि यदि बाकी भारतीय भाषाओं को रंग बिरंगे फूल कहा जाये तो हिंदी वह सूत्र है जो इन फूलों को एक बनाकर रखता है। हिंदी भारतीय संस्कृति की संवाहिका है। इस भाषा को एक तरफ संस्कृत की विरासत प्राप्त है और आधुनिक भारतीय भाषाओं से मैत्री भी। हिंदी एवं अधिकांश भारतीय भाषाओं की शब्दावली की साम्यता इसका प्रबल प्रमाण है।

संख्या की दृष्टि से देखा जाये तो हिंदी भारत की सबसे अधिक संख्या में बोलने और समझनेवाली भाषा है। उत्तर भारत के अधिकांश राज्यों की यह प्रथमभाषा है और दक्षिण, पश्चिमी, पूर्वी भारत में भी द्वितीय तथा तृतीय भाषा के रूप में लोग अपनाते हैं। यह अत्यंत सरल आम भाषा है जिसे करोडों लोग बोलते हैं। हिंदी राष्ट्रीय एकता व सांस्कृतिक सद्भावना की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

हिंदी न केवल भाषा होती है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में भी अहम भूमिका निभाती है। इसके माध्यम से हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देते हैं और भारतीय परंपराओं को समझने में सक्षम हो सकते हैं। इसके साथ ही, विभिन्न क्षेत्रों की लोकप्रिय कथाएँ, गाने और कविताएँ हिंदी में ही अधिक सरलता और गहराई से बयां की जाती हैं। हिंदी साहित्य अत्यंत समृद्ध एवं विशाल है। हिंदी में तुलसीदास, सूरदास, कबीर, जायसी, रहीम एवं मीराँ का साहित्य है और इसे सांप्रदायिक सद्भावना एवं लोक समन्वय की अद्‌भुत बानगी की संज्ञा दी जा सकती है। राजनीतिक दृष्टिकोण से भी, हिंदी एक समान स्थान रखती है जो राष्ट्रीय स्तर पर संवाद का माध्यम बनती है। यह न केवल सरकारी कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, बल्कि लोगों को अपने अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में सही जानकारी प्राप्त करने में मदद करती है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी, हिंदी एक महत्वपूर्ण भाषा है जो विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से अपनी भाषा में विचार व्यक्त करने में सहायक होती है। यह स्थानीय भाषाओं को समझने और उनकी सम्मान करने में भी मदद करती है, जिससे छात्रों में सांस्कृतिक एवं भाषिक समन्वय स्वाभाविक रूप से संपन्न हो जाता है। हिंदी के अध्ययन से रोजगार के क्षेत्र में भी अनेक मौके हासिल किये जा सकते हैं क्योंकि हिंदी सबसे अधिक जनता के द्वारा बोली और समझी जानेवाली भाषा है।

इस पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा एवं साहित्य से संबंधित उपरोक्त सभी बिंदुओं का समावेश किया गया है और हम आशा करते हैं कि इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से सभी विद्यार्थी लाभान्वित होंगे।

अस्तु...

हिन्दी - २

HINDI - 2

पाठ्य परिचय :

यह पत्र बी.ए. संस्कृत के छात्रों के लिए द्वितीय भाषा हिंदी हेतु निर्मित है। इस पत्र में छात्र हिंदी साहित्य के प्राथमिक विषयों के प्रति ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं एवं हिंदी भाषा की प्राथमिक जानकारी यथा- शब्दस्रोत, व्याकरण इत्यादि का समुपार्जन किया जा सकता है। प्रथम सत्र के इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत हिंदी साहित्य की सभी विधाओं से संबंधित सभी प्रमुख कवियों का सामान्य परिचय दिया गया है और साथ ही साथ यह ध्यान में रखा गया है कि छात्रों की रुचि को हिंदी साहित्य के प्रति बढावा मिले। मध्यकालीन कविता, आधुनिक कविता, गद्य की विधाओं में कहानी, एकांकी, व्यंग्य इत्यादि सभी विधाओं को दृष्टि में रखते हुए छात्रों को हिंदी साहित्य की विधाओं के प्रति भी सही जानकारी दिलाने का प्रयास किया गया है। 'शुद्ध कीजिए' और पत्रलेखन जैसी विविध प्रक्रियाओं के द्वारा यह प्रयास किया गया है कि व्याकरण के विविध अंशों का सही-सही उपयोग हिंदी भाषा के व्यवहार के संदर्भ में कैसे करें। व्याकरण में अनुवाद तथा पारिभाषिक शब्दावली का भी सामान्य व्यवहार छात्रों के लिए अत्यंत उपयोगी साबित होगा। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि संस्कृत के विद्यार्थियों के लिए हिंदी का यह पत्र अत्यंत आकर्षक एवं उनके भावी जीवन में रोजगार की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी है।

प्रथम खण्ड

प्रथमखंड के अंतर्गग हिंदी के भक्तिकाल का विवरण दिया जायेगा। भक्तिकाल की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए हिंदी साहित्य के इतिहास पर हल्का प्रकाश डाला जायेगा और भक्तिकाल में दो धाराओं-यथा- सगुण और निर्गुण भक्तिधारा की चर्चा की जायेगी।

निर्गुणभक्तिधारा में ज्ञानमार्गीशाखा के अंतर्गत संत कबीरदास के योगदान पर प्रकाश डालते हुए उनके द्वारा विरचित कतिपय दोहों की चर्चा की जायेगी। संदर्भ-प्रतिपदार्थ सहित एवं सप्रसंग व्याख्या के साथ दोहों का सांगोपांग विवरण प्रस्तुत किया जायेगा। कबीरदास के उपरांत भक्तिकाल के लोकप्रिय कवि सूरदास के कतिपय पदों की चर्चा की जायेगी। संदर्भ-प्रतिपदार्थ सहित एवं सप्रसंग व्याख्या के साथ इनका सांगोपांग विवरण प्रस्तुत किया जायेगा।

द्वितीय खण्ड

द्वितीय खंड के अंतर्गग हिंदी साहित्य में आधुनिक काल में रचित कविताओं का परिचय छात्रों को दिया जायेगा। हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में अत्यंत विख्यात छायावाद का परिचय दिया जायेगा और कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' एवं राष्ट्रीय एवं क्रांतिकारी विचारधारा के कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविताओं को इस खंड के दौरान छात्र पढेंगे। पाठ्यसामग्री की चर्चा के दौरान संदर्भ-प्रतिपदार्थ सहित एवं सप्रसंग व्याख्या के साथ इन कविताओं का सांगोपांग विवरण प्रस्तुत किया जायेगा।

तृतीय खण्ड

तृतीय खंड के अंतर्गग हिंदी साहित्य में आधुनिक काल में रचित गद्य साहित्य का कुछ विस्तृत रूप से परिचय दिया जायेगा। हिंदी भाषा में खडीबोली साहित्य और आधुनिककाल के आरंभ की चर्चा करते हुए भाषा के प्रामाणीकरण एवं हिंदी के व्यंग्य साहित्य का परिचय देते हुए गद्य साहित्य के अंतर्गत 'मैं नरक से बोल रहा हूँ' पाठ को पढाया जायेगा। हरिशंकर परसाई के परिचय एवं पाठ-वाचन के साथ गद्य के स्वरूप को समझने हेतु छात्रों के द्वारा गद्य का पठन

किया जायेगा। संदर्भ सहित व्याख्या एवं कठिनशब्दों के अर्थों के साथ पाठ का सारांश प्रस्तुत किया जायेगा।

चतुर्थ खण्ड

चतुर्थ खंड के अंतर्गग हिंदी साहित्य में आधुनिक काल में रचित गद्य साहित्य का परिचय दिया जायेगा। हिंदी भाषा में कहानी साहित्य के उद्भव और विकास का परिचय देते हुए पंडित श्रीरामशर्मा द्वारा रचित 'नायक का चुनाव' पाठ को पढाया जायेगा। इस संदर्भ में शिकार साहित्य को पं. श्रीरामशर्मा की देन पर भी चर्चा की जायेगी। संदर्भ सहित व्याख्या एवं कठिनशब्दों के अर्थों के साथ पाठ का सारांश प्रस्तुत किया जायेगा।

पंचम खण्ड

वैश्वीकरण के युग में अनुवाद एक अपरिहार्य प्रक्रिया है। इस परिप्रेक्ष्य में हिंदी की प्रयोजनमूलकता के स्वरूप पर ध्यान देना आवश्यक होगा। आज के युग में हिंदी ऐसी भाषा बनने जा रही जो कि यह विश्व में किसी भी अंतर्राष्ट्रीय भाषा से कम महत्वपूर्ण नहीं होगी। ऐसे में इस भाषा को समृद्ध बनाने और हिंदी साहित्य को और प्रभावशाली रूप से विश्वस्तरीय बनाने हेतु हिंदी छात्रों को तैयार रहना होगा। इस दृष्टि से हिंदी की प्रयोजनमूलकता को बढावा देते हुए इस भाषा के साथ अनुवाद का पहलू भी जोड दिया जायेगा। यह पहलू हिंदी के छात्रों को अत्यधिक रोजगारोन्मुख बनायेगा और इससे हिंदी के छात्र अत्यंत लाभान्वित होंगे। पाठ्यांशों के अंतर्गत अनुवाद को सैद्धांतिक स्तर पर छात्रों को सरल एवं बोधगम्य बनाने हेतु अनुवाद की परिभाषा, अनुवाद के स्वरूप एवं प्रकार तथा अनुवाद के महत्व पर प्रकाश डाला जायेगा।

खण्ड	विषय	पृष्ठसंख्या
प्रथम	भक्तिकाल का सामान्य परिचय एवं निर्गुण भक्तिधारा	12
	कबीरदास का परिचय	15
	कबीरदास के दोहे- पाठ	17
	कबीरदास- लघु प्रश्न	19
	कबीरदास के दोहे - संदर्भ सहित व्याख्या	22
	कवि सूरदास का परिचय	27
	सूरदास के पद- पाठ	29
	सूरदास के पद - लघु प्रश्न	30
	सूरदास के पद - संदर्भ सहित व्याख्या	32
द्वितीय	कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का परिचय	37
	"वह तोडती पत्थर" - कविता	39
	"वह तोडती पत्थर" – लघु प्रश्न	41
	"वह तोडती पत्थर" कविता की संदर्भ सहित व्याख्या	43

	“हिमाद्रि से” कविता का सारांश	47
	“हिमालय के प्रति” के कवि रामधारी सिंह ‘दिनकर’ का परिचय	48
	“हिमालय के प्रति” कविता	50
	“हिमालय के प्रति” कविता से लघु प्रश्न	53
	“हिमालय के प्रति” कविता की संदर्भ सहित व्याख्या	54
	“हिमालय के प्रति” कविता का सारांश	58
तृतीय	लेखक हरिशंकर परसाई का परिचय	59
	“मैं नरक से बोल रहा हूँ”- कहानी	60
	“मैं नरक से बोल रहा हूँ”- कहानी के लघु प्रश्न	64
	“मैं नरक से बोल रहा हूँ” कहानी की संदर्भ सहित व्याख्या	66
	“मैं नरक से बोल रहा हूँ” कहानी का सारांश	69
चतुर्थ	कहानीकार पं. श्रीरामशर्मा का परिचय	71
	“नायक का चुनाव” कहानी	72
	“नायक का चुनाव” कहानी के लघु प्रश्न	83
	“नायक का चुनाव” कहानी की संदर्भ सहित व्याख्या	84

	“नायक का चुनाव” कहानी का सारांश	87
पंचम	अनुवाद का महत्व	88
	अनुवाद की परिभाषा और अनुवाद का स्वरूप	89
	अनुवाद के प्रकार	93

प्रथमखण्ड

भक्तिकाल का सामान्य परिचय एवं निर्गुण भक्तिधारा

निर्गुणभक्ति धारा भारतीय साहित्य और धार्मिक परंपराओं में एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। यह भक्ति धारा उन भक्तों और संतों के समूह को संदर्भित करती है जिन्होंने ईश्वर को निराकार और अनन्त रूप में ध्यान में लिया है। इस धारा के प्रमुख प्रतिष्ठात संतों में कबीर, संत नामदेव, संत ज्ञानेश्वर, और संत रामानंद शामिल हैं। इन्होंने ईश्वर की प्रतिष्ठा को निराकार स्वरूप में देखा और भक्ति की महत्वपूर्णता को अद्वितीय रूप से जाना। निर्गुण भक्तिधारा का मुख्य सिद्धांत यह है कि परमात्मा अनन्त, निर्मित नहीं है और न ही उसे कोई निरूपित स्वरूप दिया जा सकता है। भक्ति यहाँ परमात्मा के साथ अनुभूति का एक साधन मानी जाती है, जो नाम-रूप से परे है। यह धारा विराट ब्रह्मांड में एकत्व के सिद्धांत पर आधारित है। इस भक्ति धारा के प्रमुख उदाहरणों में संत कबीर का उल्लेख किया जाता है, जिन्होंने अपने साहित्य में परमात्मा की निराकारता को बयान किया। उनकी रचनाओं का मुख्य मुद्दा यह है कि ईश्वर की सच्ची भक्ति का अनुभव प्राप्त करने के लिए मानव को अपनी निर्मिति और अहंकार से परे हो जाना चाहिए, क्योंकि ईश्वर अनंत है और सबमें व्याप्त है। संत नामदेव ने भी निर्गुण भक्ति की विशेषता को अपनी वाणी में उजागर किया। उन्होंने भक्ति को एक भावनात्मक संवाद के माध्यम से प्रस्तुत किया, जिसमें वे परमात्मा के साथ अपना अद्वितीय रिश्ता बयान करते हैं, जो केवल भक्त-भगवान के बीच होता है। उनके ग्रंथ 'भक्तिसार' और 'अभंग' इस भक्ति धारा के महत्वपूर्ण अंग हैं।

संत ज्ञानेश्वर 'ज्ञानेश्वरी' ग्रंथ में भी वे परमात्मा के अव्यक्त रूप को महत्व देते हैं। उन्होंने इस ग्रंथ के माध्यम से जीवन के रहस्यों को समझाने का प्रयास किया और भक्ति के माध्यम से जीवन को परमात्मा के साथ एकीकृत करने की प्रेरणा दी।

संत रामानंद ने भी निर्गुण भक्ति के माध्यम से ईश्वर के प्रति अपनी अनुभूति को व्यक्त किया। उनके द्वारा रचित दोहे और पद भक्ति के माध्यम से मुक्ति प्राप्ति की ओर मार्गदर्शन करते हैं, जहां परमात्मा को निराकार एवं अनंत के रूप में उन्होंने बताया। निर्गुणभक्ति धारा का मुख्य उद्देश्य यह है कि भक्ति के माध्यम से जीवन को ईश्वर के साथ संवाद में लाना। यहाँ परमात्मा की सच्ची अनुभूति के द्वारा आत्म साक्षात्कार को महसूस किया जाता है, जो केवल नामरूप से परे हो सकती है। इस धारा के संतों और ऋषियों ने जीवन के विभिन्न पहलुओं में भक्ति के महत्व को उजागर किया है। उन्होंने साधना, सेवा और गुरुभक्ति इत्यादि पर बल दिया है। निर्गुण भक्ति आंदोलन में संत कबीरदास सहित कई महान भक्ति कवियों ने अपना योगदान दिया है, जिनकी रचनाएँ भारतीय साहित्य में एक अमूल्य धरोहर हैं। इन संत-कवियों ने भक्ति मार्ग को निर्देशित किया और ईश्वर के निराकार स्वरूप को समझाया। यहाँ हम कुछ मुख्य भक्ति कवियों के योगदान के बारे में विस्तार से जानते हैं:

संत नामदेव- महाराष्ट्र के संत नामदेव ने भक्ति और समाज को आध्यात्मिक दृष्टिकोण से प्रेरित किया। उनकी रचनाओं में अभंगों का संग्रह है जो भगवान के निराकार स्वरूप के प्रति उनकी गहरी भक्ति को व्यक्त करते हैं। नामदेव ने सामाजिक विभेदों के खिलाफ समर्थन किया और भक्ति की साधना को जीवन का मुख्य उद्देश्य माना। उनकी रचनाओं में ईश्वर के प्रति प्रेम और सामर्थ्य का महत्वपूर्ण संदेश है।

संत रविदास- उत्तर प्रदेश के संत रविदास ने भी निर्गुण भक्ति के माध्यम से अपने शब्दों में ईश्वर के निराकार स्वरूप की महत्वपूर्णता को जानकारी दी। उनकी भक्ति रचनाएँ समाज में समानता और एकता के प्रति आवाज उठाती हैं, और वे धार्मिक और सामाजिक सुधार के पक्षधर रहे हैं। उनके शब्दों में आत्मा के अंतर्मुखीकरण और ईश्वर के साथ आत्मिक संवाद का महत्वपूर्ण संदेश है।

संत दादूदयाल- राजस्थान के संत दादूदयाल ने अपने दोहों के माध्यम से भक्ति और आत्मा की ऊँचाई को समझाया। उनकी रचनाओं में ईश्वर के अनिर्देशित स्वरूप का महत्व बयान

किया गया है, और वे स्वतंत्रता, सेवा, और संयम के माध्यम से आत्मा की स्वतंत्रता को प्राप्त करने का मार्गदर्शन करते हैं।

संत कबीरदास का परिचय

सन्त कबीरदास का हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल में एक विशिष्ट स्थान है। कबीर दास भारतीय संत-कवि थे, जिनका योगदान हिन्दी साहित्य में अनमोल है। उन्होंने अपने जीवन और रचनाओं के माध्यम से समाज को धार्मिक, सामाजिक और मानवीय मूल्यों की ओर मोड़ने का प्रयास किया। उनकी रचनाओं में 'निर्गुण भक्ति' का विशेष महत्व है, जो उनके विचारों का मुख्य आधार था। कबीर दास के अनुसार, भगवान को साकार रूप में नहीं, बल्कि निराकार और अनंत रूप में पूजना चाहिए। उन्होंने व्यक्तिगत देवताओं के पूजन का विरोध किया और बताया कि भगवान व्यक्तिगत रूप में नहीं, बल्कि सबके भीतर हैं। उनकी रचनाओं में भगवान के प्रति निष्काम भक्ति की महत्वपूर्ण प्रेरणा मिलती है, जिसमें भक्ति का मार्ग निर्दिष्ट होता है, बिना किसी मध्यस्थता के। उन्होंने सामाजिक और धार्मिक विवादों पर भी विचार किया था, और उन्होंने उस समय की स्थितियों को चुनौती देने का कर्म किया। उनके साहित्य में उनके अनुभवों, भावनाओं और उनके दर्शाए गए जीवन-मुद्दों का सार है।

आप भक्तिकाल की निर्गुण भक्तिधारा में ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि थे। कहा जाता है कि आपका जन्म विवादास्पद है और लोकलाज के भय से उसने शिशु को लहरतारा नामक तालाब के पास छोड़ दिया। तब नीरू और नीमा नामक मुसलमान दम्पति ने आपको पाल-पोसकर बड़ा किया। कबीरदास ने स्वयं को 'अनपढ़' घोषित किया। आप पेशेवर जुलाहा थे। आपने देशाटन, सज्जन- सांगत्य तथा अनुभव से ज्ञान-समुपार्जन किया। आपकी रचनाओं को शिष्यों ने 'बीजक' नाम से संकलित किया जो 'साखी', 'सबद' और 'रमैनी' नामक तीन भागों में है। कबीर की भाषा सधुक्कड़ी थी। सधुक्कडी ऐसी भाषा है जिसमें अनेक मुख्य भाषाओं के शब्द पाये जाते हैं। नीति, मिथ्या विश्वास एवं मूढ़ परंपराओं का खण्डन, तीखी भाषा आपकी कविताई की विशेषताएँ हैं । आपको एक योगी के रूप में देखा जाता है, जिन्होंने योगाभ्यास को महत्व दिया। भक्तिमार्ग से अधिक आप ज्ञानमार्ग को प्रश्रय देते हैं।

उनका संदेश था कि भगवान हर व्यक्ति के अंदर होते हैं और उन्हें प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को अपने मन की शुद्धता और निर्मल भावनाओं के साथ अपने आत्म-अनुभव के दर्शन

करने की आवश्यकता होती है। कबीर दास की निर्गुण भक्ति विशेषता से उनकी कविताओं में प्रतिफलित होती है, जिनमें सच्ची धार्मिकता, साहसिकता और मानवीयता के सिद्धांत छुपे होते हैं। उनकी रचनाओं ने न केवल उस समय के लोगों के मानवीय और धार्मिक सोच को प्रभावित किया, बल्कि आज भी उनका संदेश लोगों को मार्गदर्शन करता है।

कबीरदास के दोहे

1. काल करै सो आज कर, आज करै सो अब ।
   पल में परलै होयगी, बहुरि करोगे कब । ।

2. साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।
   जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप ।।

3. माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुखमांहि।
   मनवाँ तो दस - दिसि फिरै, सो तो सुमिरन नांहि । ।

4. सुखिया सब संसार है, खावै अरु सोवै ।
   दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवे।।

5. गुरु गोबिन्द दोऊ खड़ें, काके लागू पाँय ।
   बलिहारी गुरु आपणे, जिन गोबिन्द दियो बताय ।।

6. माली आवत देखिकर, कलियाँ करी पुकार ।
   फूलै फूलै चुनि लिये, काल्हि हमारी बार ।।

7. माषी गुड़ में गड़ि रही, पंष रही लपटाइ ।
   ताली पीटै सिरि धुनै, मीठे बोई माई ||

8. तेरा साँई तुझमें, ज्यों पुहुपन में बास ।

कस्तूरी का मिरग ज्यों, फिर-फिर ढूँढै घास ।।

9. गुरु कुम्हार सिष कुम्भ है, गढ़- गढ़ काढ़े खोट ।
   गढ़-गढ़ अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहें चोट ।।

10. साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाई ।
    सार-सार को गहि रहै, थोथा देई उडाई ।।

लघु प्रश्न :

1. संत कबीरदास का लघु परिचय दीजिए?

उत्तर: संत कबीरदास हिंदी के सबसे लोकप्रिय कवियों में से हैं। आपको निर्गुणभक्तिधारा खी ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि के रूप में देखा जाता है। आपकी भाषा को सधुक्कडी कहा जाता है। आपकी रचनाओं का संकलन 'बीजक' है।

2. कबीरदास की भाषा क्या थी?

उत्तर: कबीरदास की भाषा 'सधुक्कड़ी' थी।

3. कबीरदास की माता, पिता और गुरु के नाम लिखिए।

उत्तर: आपके माता-पिता एवं गुरु के नाम हैं- नीमा, नीरू और रामानन्द ।

4. कबीरदास के अनुसार गुरु और भगवान में बडा कौन है ?

उत्तर: कबीरदास के अनुसार गुरु भगवान से भी बड़े हैं। क्योंकि भगवान को पहुँचने का मार्ग गुरु ही जानता है। अतः कबीरदास गुरु को भगवान से भी महत्त्वपूर्ण मानते हैं।

5. काल के संबंध में कबीरदास के विचार क्या हैं?

उत्तर: कबीरदास के अनुसार 'काल' अथवा मृत्यु अत्यंत शक्तिशाली है । वह किसी भी क्षण आकर हमें उठा ले सकता है। इसलिए सब लोग काल को ध्यान में रखकर भगवान की भक्ति करें।

6. समय-पालन के बारे में कबीरदास क्या कहते हैं ?

उत्तर: कबीरदास के अनुसार समय-पालन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है । वे बताते हैं कि कल जो काम करना चाहिए, वह आज ही करें और आज जो काम करना चाहिए, वह अभी पूरा कर लें। क्योंकि प्रलय किसी भी क्षण आ सकता है।

7. सत्य के बारे में कबीरदास के विचार क्या हैं?

उत्तरः कबीरदास के अनुसार सत्य के समान अन्य तपस्या नहीं है। झूठ के समान पाप भी नहीं है। जिसके पास सत्य/ईमानदारी है, उस हृदय में साक्षात् भगवान का निवास है ।

8. कबीरदास के अनुसार भगवान का निवास क्या है?

उत्तरः कबीरदास का मंतव्य है कि भगवान अन्तर्यामी है। फूलों में सुगंध की तरह वह हर एक के अंदर निवास करता है । लेकिन उसे पहचानना आवश्यक है।

9. साधु को किसप्रकार रहना चाहिए?

उत्तरः साधु को सूप के समान रहना चाहिए। सूप सार को ग्रहण करके थोथा / व्यर्थ को छोड़ देता है। उसी प्रकार साधु को भी समाज में अच्छाई का ग्रहण करके बुराई को छोड़ देना चाहिए।

10. भोग-विलासिता के बारे में कबीरदास का वचन क्या है?

उत्तरः भोग-विलास का परिणाम अत्यंत विनाशकारी है। जो आदमी भोग-विलास करता है वह 'गुड में मक्षिका' के समान नष्ट हो जाता है। कबीरदास का अभिप्राय है- 'भोग-विलासों से दूर रहो।

संदर्भ सहित व्याख्या

माली आवत देखि करि, कलियाँ करीं पुकार।

फूलै फूलै चुन लिए काल्हि हमारी बार।।

सन्दर्भ

संत कबीरदास हिंदी के सबसे लोकप्रिय कवियों में से हैं। आपको निर्गुणभक्तिधारा की ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि के रूप में देखा जाता है। आपकी भाषा को सधुक्कडी कहा जाता है। आपकी रचनाओं का संकलन 'बीजक' है। प्रस्तुत दोहे में आप मृत्यु की अनिवार्यता के बारे में कहते हैं।

व्याख्या

प्रस्तुत दोहे में कबीरदास कहते हैं- 'माली को आते हुए देखकर कलियाँ भयभीत हो गयी हैं । वे आपस में बात करती हैं कि माली फूलों को चुनकर ले जाएगा। आज तो हम बच गयीं, लेकिन कल हम भी फूल बनेंगी और कल हमारी बारी है।'

विशेषता

प्रस्तुत पंक्तियों में माली 'मृत्यु' का संकेत है और फूल जीव के संकेत हैं। कबीरदास का जीवनानुभव इस दोहे से छलकता है।

माषी गुड में गडि रही, पंष रही लपटाई।

ताली पीटै सिह धुनै, मीठै बोइ माई।।

सन्दर्भ

संत कबीरदास हिंदी के सबसे लोकप्रिय कवियों में से हैं। आपको निर्गुणभक्तिधारा की ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि के रूप में देखा जाता है। आपकी भाषा को सधुक्कडी कहा जाता है। आपकी रचनाओं का संकलन 'बीजक' है। प्रस्तुत दोहे में आप भोग विलासिता का खण्डन करते हैं।

व्याख्या

प्रस्तुत दोहे में कबीरदास कहते हैं- 'मक्खी गुड़ के प्रति आकर्षित होकर उस पर जा बैठी है वह उसमें धीरे-धीरे फँस गयी । बाहर आने का बहुत प्रयास करती है, किन्तु आ नहीं सकती। इससे पता चलता है कि मधुरता विनाशकरी है। मनुष्य भी भोग-विलास के व्यामोह में पड़कर मक्खी की तरह नष्ट हो जायेगा ।

विशेषता

इसमें गुड़, भोग-विलास का प्रतीक है तो मक्खी, मनुष्य का प्रतीक है। सभी भक्तकवियों ने लोक की नश्वरता एवं मृत्यु की अनिवार्यता के बारे में उपदेश दिया। कबीरदास इसके अपवाद नहीं हैं।

तेरा साँई तुझ में ज्यों पुहुपन में बास।

कस्तूरी का मिरग ज्यों, फिरि फिरि ढूंढै घास।।

संदर्भ

संत कबीरदास हिंदी के सबसे लोकप्रिय कवियों में से हैं। आपको निर्गुणभक्तिधारा की ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि के रूप में देखा जाता है। आपकी भाषा को सधुक्कडी कहा जाता है। आपकी रचनाओं का संकलन 'बीजक' है। प्रस्तुत दोहे में आप भगवान की सर्वव्यापकता के बारे में उपदेश देते हैं।

व्याख्या

इस दोहे में कबीरदास कहते हैं "भगवान हमारे अंदर ही विद्यमान है। पर वह फूलों में सुगंध के समान अदृश्य है। कस्तूरीमृग अपनी नाभि से निकलती कस्तूरी को जाने बिना बाहर घास में उसके लिए अन्वेषण करता है। उसी प्रकार भगवान को अपने अंदर पहचाने बिना भौतिक लोक में उसके लिए खोजना व्यर्थ है।''

विशेषता

प्रस्तुत दोहे में भगवान के अस्तित्व का प्रमाण दिया गया है। कस्तूरीमृग का उदाहरण सार्थक है।

गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढि, गढि काढै खोट।

अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट।।

संदर्भ

यह दोहा गोस्वामी तुलसीदास के द्वारा विरचित है। गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी में सवसे लोकप्रिय कवि हैं। आप भक्तिकाल में रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं।' रामचरित मानस आपके द्वारा विरचित महाकाय है। उनके दोहे मात्र भक्ति के ही नहीं, उपदेश एवं सामाजिक सामंजस्य के लिए भी प्रसिद्ध हैं। प्रस्तुत दोहे में आप गुरु एवं शिष्य के संबंध पर प्रकाश डालते हैं।

व्याख्या

इस दोहे में कबीरदास कहते हैं कि गुरु कुंभकार है तो शिष्य कुंभ है। कुंभ को सही आकार देने के लिए कुंभकार बाहर से थपथपाई करता है । उसी प्रकार गुरु भी शिष्य को ठीक रास्ते पर लाने के लिए उसे दण्ड देता है। किन्तु यह शिष्य की भलाई के लिए ही। अर्थात् गुरु की प्रताडना अथवा कटुवचनों को शिष्य कभी वैयक्तिक रूप से स्वीकार न करें। यह सब शिक्षा के अंतर्गत गुरु के द्वारा शिष्य को ठीक करने का मार्ग है।

विशेषता

गुरु का हर काम शिष्य के उद्धार के लिए होता है। गुरु का गुणगान और गुरु के प्रति सद्भावना के विचार भक्तिकाव्य की विशेषता है। कबीरदास ने भी अपने साहित्य में कई बार गुरु के महत्व पर जोर दिया। प्रस्तुत दोहा इसका उदाहरण है।

साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।

सार सार को गहिं रहै थोथा देइ उडाय।।

संदर्भ

यह दोहा गोस्वामी तुलसीदास के द्वारा विरचित है। गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी में सवसे लोकप्रिय कवि हैं। आप भक्तिकाल में रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं।' रामचरित मानस आपके द्वारा विरचित महाकाय है। उनके दोहे मात्र भक्ति के ही नहीं, उपदेश एवं सामाजिक सामंजस्य के लिए भी प्रसिद्ध हैं। प्रस्तुत दोहे में आप सज्जन के स्वभाव पर प्रकाश डालते हैं।

व्याख्या

कबीरदास कहते हैं कि सज्जन को सूप की तरह रहना चाहिए। सूप सार को ग्रहण करके थोथा / व्यर्थ को छोड़ देता है । उसी प्रकार साधु को भी समाज में अच्छाई का ग्रहण करके बुराई को छोड़ देना चाहिए।

विशेषता

साधु का अर्थ सज्जन है। सूप का उदाहरण अत्यंत सार्थक है। भक्तिकाल के कवियों ने समाज में रहकर समाज के लिए कविता की थी। इसलिए सामान्य जन को भी समझ आये, इस प्रकार के कई सरल उदाहरणों का सुंदर प्रयोग उनके काव्य में मिलता है। कबीरदास इस विषय में और भी प्रख्यात हैं। प्रस्तुत दोहा इसका उदाहरण है।

सूरदास के पद

भक्तकवि सूरदास का परिचय

सूरदास, भारतीय संस्कृति का वह दिव्यनाम है जिनका योगदान न केवल कृष्ण भक्ति वाणी में, बल्कि साहित्य के अद्वितीय क्षेत्र में भी अत्यधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। सूरदास के पद भारतीय साहित्य की स्वर्णिम धरोहर, जो आज भी भक्ति और संगीत के माध्यम से लोगों के मन और आत्मा को संस्पर्शित करते हैं।

सूरदास हिन्दी काव्य के सर्वश्रेष्ठ कृष्णभक्त कवि हैं। आपका जन्म 'सीही' नामक गाँव में हुआ था। यह प्रसिद्ध है कि सूरदास जन्मांध थे। स्वामी वल्लभाचार्य आपके गुरु थे। वल्लभाचार्य जी के द्वारा पुष्टिमार्ग में दीक्षित होने के बाद आपने श्रीनाथ जी के मंदिर में बैठकर साख्य, वात्सल्य एवं माधुर्य भक्ति के पद रचने का कार्य किया। सूरदास का शेष जीवन उसी मंदिर में बीता ।

वल्लभाचार्य के निधनोपरान्त उनके पुत्र विट्ठलनाथ जी ने अष्टछाप कवियों की परंपरा की स्थापना की। इन कवियों में सूरदास का सर्वश्रेष्ठ एवं अव्वल स्थान है। सूरदास ने 'सूरसागर', 'सूरसारावली' एवं 'साहित्य लहरी' नामक ग्रन्थों की रचना की। परन्तु इनकी ख्याति का मूलाधार 'सूरसागर' ही है। इसमें कृष्ण की बाल-लीलाओं तथा भ्रमरगीत प्रसंग हिन्दी काव्य के चिरस्थायी प्रसंग हैं। सूरदास की भाषा शुद्ध एवं साहित्यिक ब्रज है।

सूरदास के भजन और संकीर्तन भगवान श्रीकृष्ण के प्रति उनकी भक्ति और प्रेम के प्रतीक हैं। उन्होंने अपने संकीर्तनों में भगवान की लीलाओं, विरह, और प्रेम की अद्वितीय भावनाओं को सुंदरता से व्यक्त किया है। उनके भजन जनमानस में भगवान के प्रति अटूट श्रद्धा को जागृत करते हैं और उन्हें भगवान के साथी बनाने के लिए प्रेरित करते हैं।

सूरदास के भजनों की विशेषता यह है कि वे सीधी एवं सरल भाषा में लिखे गए हैं, जिससे हर व्यक्ति उन्हें आसानी से समझ सकता है। उनकी रचनाओं में संगीतपरक-साहित्य की विशेषता है, जिसने उन्हें भारतीय संगीत और साहित्य के इतिहास में एक महान योगदानकर्ता के रूप में स्थापित किया है।

सूरदास की कृष्ण भक्ति के न केवल हिन्दी साहित्य में, बल्कि पूरे भारतीय सांस्कृतिक समृद्धि में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान है। उनके भजनों का प्रभाव आज भी अद्वितीय है और लोगों को आध्यात्मिक संजीवनी प्रदान करता है। उनके द्वारा गाए गए भजन और पद न केवल भक्ति के आधार पर ही स्थिर हैं, बल्कि वे साहित्य और संगीत के माध्यम से मानवता के अद्वितीय रूप और भगवान के प्रति प्रेम की अद्वितीय भावना को प्रस्तुत करते हैं। यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं कि सूरदास न केवल हिंदी के प्रतिनिधि कवि हैं, बल्कि भारत के सर्वश्रेष्ठ सांस्कृतिक प्रतिनिधियों में से एक गिने जाते हैं। सूरदास का साहित्य केवल साहित्य ही नहीं बल्कि संगीत और भक्ति का भी सर्वश्रेष्ठ बानगी स्थापित करता है।

प्रस्तुत पाठ तीन पदों का संकलन है। प्रथम पद सूरदास की प्रपत्तिमार्गी भक्ति का उदाहरण है तो दूसरा पद यशोदा के वात्सल्य तथा तीसरा पद भ्रमरगीत प्रसंग के उत्तम उदाहरण हैं।

सूरदास के पद

1. चरन कमल बंदौ हरिराई ।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघे अंधे कूँ सब कछु दरसाई ।।
बहिरौ सुनै मूक पुनि बोलै रंक चलै सिर छत्र धराई ।
सूरदास स्वामी करुनामय बार बार बंदौ तेहि पाई ।।

2. जसोदा हरिपालने झुलावै ।
हलरावै दुलराइ मल्हावै जोई सोई कछु गावै ।।
मेरे लाल को आउ निदरिया काहें न आनि सुलावै ।
तू काहे नहीं बेगि सों आवै तोको कान्ह बुलावै ।।
कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं कबहुँ अधर फरकावै ।
सोवत जानि मौन ह्वै रहि रहि करि करि सैन बतावै ।।
इहि अन्तर अकुलाइ उठे हरि जसुमति मधुरे गावै ।
जो सुख 'सूर' अमर मुनि दुरलभ सो नंद भामिनि पावै ।।

3. निसिदिन बरसत नैन हमारे ।
सदा रहत पावस ऋतु हम पै जब ते स्याम सिधारे ।।
दृग अंजन लागत नहिं कबहुँ उर कपोल भए कारे ।
कंचुकि नहिं सूखत सुनु सजनी उर बिच बहत पनारे ।।
'सूरदास' प्रभु अम्बु बढ्यो है गोकुल लेहु उबारे ।
कहँ लौं कहौं स्याम घन सुन्दर विकल होत अति भारे ।।

लघु प्रश्न

1) सूरदास का परिचय दीजिए।?

उत्तर: सूरदास को हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल में सगुण भक्तिधारा के अंतर्गत कृष्णभक्तिशाखा के कवि माना जाता है। आपके गुरु स्वामी वल्लभाचार्य जी थे । आपका प्रसिद्ध महाकाव्य 'सूरसागर' है। उनकी साहित्यिक भाषा ब्रज थी।

2) सूरदास ने यशोदा का किस प्रकार चित्रण किया?

उत्तरः सूरदास ने यशोदा को एक वात्सल्यमूर्ति के रूप में चित्रित किया । वह बालकृष्ण को पालने में सुलाती है और लोरी गाती है । यह सौभाग्य देवताओं को भी प्राप्त न था ।

3) हरि कृपा का महत्व क्या है?

उत्तर : भगवान श्रीकृष्ण की कृपा से विकलांग भी पर्वत की चढ़ाई कर सकता है । अंधा सबकुछ देख सकता है और दरिद्र भी राजा बन सकता है

4) सूरदास के गुरु कौन हैं?

उत्तरः कृष्णभक्तिशाखा के अष्टछाप कवियों में सूरदास अग्रणी थे । आपके गुरु स्वामी वल्लभाचार्य थे।

4) गोकुल में गोपियों की अवस्था कैसी है?

उत्तरः गोपियों की विरहवेदना असह्य थी । श्रीकृष्ण के वृंदावन से चले जाने के बाद गोकुल में सदा पावस ऋतु ही रहती है। अर्थात् वे हमेशा श्रीकृष्ण के लिए आँसू बहाती हैं।

5) गोपियों ने उद्धव से क्या कहा?

उत्तरः गोपियों ने उद्धव से कहा 'श्रीकृष्ण के वृंदावन से चले जाने के बाद गोकुल में सदा पावस ऋतु रहती है। अर्थात् वे हमेशा श्रीकृष्ण के लिए आँसू बहाती हैं । इसलिए वे तुरन्त आकर उनका उद्धार करें ।'

6) भ्रमरगीत की विशेषता क्या है?

उत्तर- भ्रमरगीत सूरदास के 'सूरसागर' महाकाव्य का एक अंग है। यह श्रीमद्भागवत के आधार पर लिखा गया है। इसमें भ्रमर श्रीकृष्ण का संकेत है।

7) कवि सूरदास किस रस के लिए विख्यात हैं?

उत्तर : कवि सूरदास वात्सल्य रस के लिए अत्यंत विख्यात कवि हैं। उनके साहित्य में वात्सल्य रस की प्रमुखता को देख-परखकर हिंदी साहित्य की परंपरा में आलोचकों ने वात्सल्य रस के लिए एक अलग ही स्थान प्रदान किया था।

8) गोकुल में हमेशा कौन सी ऋतु है?

उत्तर : गोकुल की गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि जब से श्याम अर्थात् श्रीकृष्ण गोकुल छोडकर मथुरा चले गये हैं, तब से वहां सदा पावस ऋतु ही है। क्योंकि श्रीकृष्ण के विरह के कारण सभी लोग अत्यंत उदास हैं और उनके नेत्रों से झरती आँसुओं की धाराओं के कारण लगता है कि गोकुल से वर्षा ऋतु कभी जाने का नाम ही नहीं लेती!

संदर्भ सहित व्याख्या :

चरन कमल बंदौ हरिराई ।

जाकी कृपा पंगु गिरि लंघे अंधे कूँ सब कछु दरसाई ।।

बहिरौ सुनै मूक पुनि बोलै रंक चलै सिर छत्र धराई ।

सूरदास स्वामी करुनामय बार बार बंदौ तेहि पाई ।।

संदर्भ :

प्रस्तुत पद भक्तकवि सूरदास के द्वारा विरचित है। सूरदास को हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल में सगुण भक्तिधारा के अंतर्गत कृष्णभक्तिशाखा के कवि माना जाता है। आपके गुरु स्वामी वल्लभाचार्य जी थे। आप कृष्णभक्तिशाखा के अंतर्गत अष्टछाप के कवियों में अग्रणी माने जाते थे। आपका प्रसिद्ध महाकाव्य 'सूरसागर' है। उनकी साहित्यिक भाषा ब्रज थी। प्रस्तुत पद में सूरदास ने श्रीकृष्ण की महिमा का वर्णन किया।

व्याख्या :

प्रस्तुत पद में सूरदास कहते हैं 'मैं, श्रीकृष्ण के चरण कमलों की वन्दना करता हूँ। उनकी कृपा से विकलांक भी पर्वत की चढ़ाई कर सकता है। अंधा देख सकता है और बहरा सुन सकता गूँगा बोल सकता है और दरिद्र भी राजा बनकर सुख पाता है।' यह शरणागति का संकीर्तन है।

विशेषता :

प्रस्तुत पंक्तियों में श्रीकृष्ण की महिमा का वर्णन किया गया। सूरदास श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त थे। कहा जाता है कि सूरदास ने यह पद उस समय लिखा, जब वे श्रीमद्वल्लभाचार्य जी के शिष्य नहीं बने। गुरु के दर्शन के बाद ही वे श्रीकृष्ण के उन्मुक्त स्वरूप के दर्शन कर सके और उसका

सार अपने साहित्य में प्रतिबिंबित करने में सफल रहे। तब तक वे शरणागति के संकीर्तन ही गाया करते थे।

जसोदा हरिपालने झुलावै ।

हलरावै दुलराइ मल्हावै जोई सोई कछु गावै ।।

मेरे लाल को आउ निदरिया काहें न आनि सुलावै ।

तू काहे नहीं बेगि सों आवै तोको कान्ह बुलावै ।।

कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं कबहुँ अधर फरकावै ।

सोवत जानि मौन ह्वै रहि रहि करि करि सैन बतावै ।।

इहि अन्तर अकुलाइ उठे हरि जसुमति मधुरे गावै ।

जो सुख 'सूर' अमर मुनि दुरलभ सो नंद भामिनि पावै ।।

संदर्भ :

प्रस्तुत पद भक्तकवि सूरदास के द्वारा विरचित है। सूरदास को हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल में सगुण भक्तिधारा के अंतर्गत कृष्णभक्तिशाखा के कवि माना जाता है। आपके गुरु स्वामी वल्लभाचार्य जी थे। आप कृष्णभक्तिशाखा के अंतर्गत अष्टछाप के कवियों में अग्रणी माने जाते थे। आपका प्रसिद्ध महाकाव्य 'सूरसागर' है। उनकी साहित्यिक भाषा ब्रज थी। प्रस्तुत पद में सूरदास ने श्रीकृष्ण की बाललीलाओं का वर्णन किया।

व्याख्या :

प्रस्तुत पद में सूरदास गाते हैं- 'यशोदा हरि का पालना झुला रही है। बालकृष्ण को सुलाने के लिए वह लोरी गाती है। नींद को बुलाती है कि वह क्यों जल्दी नहीं आती। बालकृष्ण उसे बुला रहा है, इसलिए वह जल्दी आकर सुलावे। बालकृष्ण कहीं जाग नहीं जायें, इसलिए यशोदा रह रह कर सैन करती हुई अर्थात् संकेत करती हुई, घर के सारे काम-काज संभालती है। कभी

बालक के अधर हिलते हैं तो कभी उनकी आँखें बंद हैं। बीच में बालकृष्ण जाग जाते हैं इसलिए फिर वह गाती है । जो सौभाग्य देवताओं को भी प्राप्त न था वह नंद की पत्नी को प्राप्त हो गया ।'

विशेषता: प्रस्तुत पंक्तियों में यशोदा के मातृ-वात्सल्य का वर्णन मिलता है। इस पद को वात्सल्य रस की चरमसीमा कहा जा सकता है। इसमें कवि ने जिस चलित बिंब का वर्णन किया, वह सजीव एवं आँखों देखा बन पडा है।

निसिदिन बरसत नैन हमारे।

सदा रहत पावस ऋतु हम पै जब तें स्याम सिधारे ।।

दृग अंजन लागत नहिं कबहुँ उर कपोल भए कारे ।

कंचुकि नहिं सूखत सुनु सजनी उर बिच बहत पनारे । ।

'सूरदास' प्रभु अम्बु बढ्यो है गोकुल लेहु उबारे ।

कहँ लौं कहौं स्याम घन सुन्दर विकल होत अति भारे ।।

संदर्भ :

प्रस्तुत पद भक्तकवि सूरदास के द्वारा विरचित है। सूरदास को हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल में सगुण भक्तिधारा के अंतर्गत कृष्णभक्तिशाखा के कवि माना जाता है। आपके गुरु स्वामी वल्लभाचार्य जी थे। आप कृष्णभक्तिशाखा के अंतर्गत अष्टछाप के कवियों में अग्रणी माने जाते थे। आपका प्रसिद्ध महाकाव्य 'सूरसागर' है। उनकी साहित्यिक भाषा ब्रज थी। प्रस्तुत पद सूरदास की प्रख्यात कृति 'भ्रमरगीत' से संकलित है।

व्याख्या :

प्रस्तुत पद में गोपियाँ उद्धव से अपनी वेदना प्रकट करती हैं। वे कहती हैं ' श्रीकृष्ण के वृंदावन से चले जाने के बाद गोकुल में सदा पावस ऋतु ही रहती है। अर्थात् वे हमेशा श्रीकृष्ण के लिए आँसू बहाती हैं। 'श्रीकृष्ण के बृंदावन से चले जाने के बाद गोकुल में सदा पावस ऋतु ही रहती है। अर्थात् वे हमेशा श्रीकृष्ण के लिए आँसू बहाती हैं। उनका हृदय हमेशा काला बना रहता है, अर्थात् आँसुओं की धाराओं के कारण काजल आँखों में टिकता ही नहीं और आँसुओं में मिलकर, गलकर, हृदय को काला बना देता है। आँसुओं की अजस्र धाराओं के कारण उनके हृदय पर नाले बह रहे हैं। इसलिए वे तुरन्त आकर उनका उद्धार करें।'

विशेषता:

प्रस्तुत पद भ्रमरगीत का एक पद है। भ्रमरगीत व्यंग्य शैली का अत्युत्तम उदाहरण है। इसमें श्रीकृष्ण भ्रमर के प्रतीक हैं और गोपियाँ फूलों के। यह श्रीमद्भागवत पुराण के दशमस्कन्ध पर आधारित है। पद में द्रष्टव्य है कि 'उह कपोल भए कारे' में एक शाब्दिक चमत्कार बन पडा है, जहाँ गोपियाँ अपने हृदय के काले होने का वक्तव्य काजल के माध्यम से देते हुए इसका भी संकेत कर रही हैं कि उनका हृदय अत्यंत दुखित है क्यों कि काला वर्ण दुख एवं उदासी का रंग है।

द्वितीय खण्ड

वह तोडती पत्थर

कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का परिचय

प्रस्तुत कविता के कवि श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हैं। आप आधुनिक हिन्दी साहित्य में छायावाद युग के चार प्रतिनिधि कवियों में एक हैं। सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' को छायावादी प्रमुख चार कवियों में एक माना जाता है। आपका जन्म सन् 1898ई. में बसंन्त पंचमी के दिन बंगाल के महिषादल गाँव में हुआ था। आपके पिताजी रामसहाय तिवारी महिषादल राजघराने में सिपाही का काम करते थे। सूर्यकान्त की आरंभिक शिक्षा बंगला में हुई और पत्नी मनोहरा देवी से प्रेरणा पाकर आपने हिन्दी की ओर प्रस्थान किया। कवि निराला ने प्रत्येक क्षेत्र में नयेपन का झण्डा फहराया। सभी बन्धनों के प्रति विरोध की भावना आपके लेखन की विशेषता है। 'अनामिका', 'परिमल', 'गीतिका', 'तुलसीदास', 'राम की शक्तिपूजा', 'आराधना', 'गीत गुंज' आदि आपके काव्य-संग्रह हैं। 'अलका', 'अप्सरा', 'निरुपमा' आदि आपके उपन्यास हैं। 'लिली', 'सखी', 'सुकुल की बीवी' कहानियाँ हैं। आपके साहित्य में ओजगुण की प्रधानता दिखाई देती है। आपको हिन्दी में छन्द के बन्धनों को तोड़ने का श्रेय प्राप्त है।

प्रस्तुत कविता आधुनिक हिन्दी कविता में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसमें कवि ने सामाजिक बंधनों का तिरस्कार किया। इसमें एक मज़दूरिन की दयनीय स्थिति का सजीव चित्रण पाया जाता है। मेहनत करने के लिए विवश श्रमिकवर्ग की वेदना इस कविता की वस्तु है। कविता की नायिका उसी वर्ग से है, जिस वर्ग के खुन-पसीने के कारण सडकें बनती हैं और इमारतें खडी की जाती हैं, किंतु उनके द्वारा निर्मित सड़कों पर किसी दूसरे की गाडियाँ दौडती हैं और उन बंगलों में कोई दूसरा निवास करता है।

विषयवस्तु के संबंध में भी प्रस्तुत कविता निराली है। क्योंकि जब केवल चांदनी और चंद्रमा को ही सौंदर्य के प्रतीक माने जाते थे, और सम्भ्रान्त वर्ग की महिला को सबसे सुंदरी और

काव्य-नायिका घोषित किया जाता था, कवि ने श्रमिक वर्ग के सौंदर्य को इस कविता में चित्रित करने का साहस किया और मजदूरिन को काव्यनायिका बनाया।

“वह तोडती पत्थर”

वह तोड़ती पत्थर,
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर-
वह तोड़ती पत्थर ।
नहीं छायादार
पेड़, वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन,
प्रिय कर्मरत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार-
सामने तरु-मालिका, अट्टालिका, प्राकार ।

चढ़ रही थी धूप,
गर्मियों के दिन,
दिवा का तमतमाता रूप,
उठी झुलसाती हुई लू,
रुई ज्यों जलती हुई भू,
गर्द चिनगी छा गयी,
प्रायः हुई दुपहर –
वह तोड़ती पत्थर ।

देखते देखा, मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्न तार,
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से,
जो मार खा रोयी नहीं।

सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झुंकार ।
एक छन के बाद वह काँपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा
'मैं तोड़ती पत्थर'।

लघु प्रश्न

1) 'वह तोडती पत्थर' कविता के कवि कौन हैं? उनकी विशिष्टता क्या है?

उत्तर: 'हिमाद्रि से' कविता के कवि श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हैं। आप हिंदी में 'छायावाद' के प्रमुख कवि हैं। निराला हिंदी में ओजगुण एवं विद्रोहस्वर के कवि माने जाते हैं। 'महाप्राण' उनका एक और उपनाम है।

2) श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हिंदी में किस वाद के कवि हैं?

उत्तर: श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हिंदी में छायावाद के कवि हैं।

3) श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' किस प्रदेश के थे?

उत्तर: श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' मूलतः बिहार से थे किंतु पिताजी की नौकरी के कारन बंगाल के महिषादल राज्य में मेदिनीपुर जिले में जा बसे।

4) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' को 'महाप्राण' क्यों कहा जाता था ?

उत्तर: सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ओजस्वी तथा गंभीर व्यक्तित्व से पूर्ण प्रतिभाशाली थे । इसलिए उनको 'महाप्राण' कहा जाता था।

5) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का उपनाम 'निराला' क्यों पडा ?

उत्तर: सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में छायावाद युग के प्रमुख कवि हैं। आपकी कविता सौंदर्य, ओजगुण तथा क्रान्ति के लिए प्रसिद्ध है। आप अन्य कवियों से भिन्न थे, इसलिए आपका उपनाम 'निराला' है।

6) मज़दूरिन पत्थर कैसे तोड़ रही थी ?

उत्तर: मज़दूरिन इलाहाबाद की सड़क पर पत्थर तोड़ रही थी । वह अत्यंत कठिन वातावरण था। फिर भी वह आनंद से अपना काम कर रही थी ।

7) मजदूरिन की दुस्थिति का चित्रण कवि ने किस प्रकार किया ?

उत्तर: मज़दूरिन अत्यंत कठिन वातावरण में पत्थर तोड़ रही थी । वह भयानक गरमी का समय था। वहाँ उसे बैठने के लिए छायादार पेड़ भी नहीं था । सामने जो भवन और वृक्ष हैं, वहाँ जाना उसके लिए मना था।

8) मज़दूरिन किस प्रकार थी?

उत्तर: मज़दूरिन का शरीर कृष्ण वर्ण का था । वह भरे यौवन में थी । देखने में वह अत्यंत सुंदर थी ।

9) 'तोड़ती पत्थर' कविता की क्या विशेषता है ?

उत्तर: 'तोड़ती पत्थर' कविता की वस्तु की विशेषता यह है कि इसमें एक मज़दूरिन को नायिका के रूप में चित्रित किया गया। इसमें श्रमसौंदर्य का चित्र मिलता है । कवि की सहानुभूति और श्रमिक वर्ग की दुस्थिति का चित्रण भी पाया जाता है।

10) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का साहित्यिक परिचय दीजिए।

उत्तर: कवि निराला ने प्रत्येक क्षेत्र में नयेपन का झण्डा फहराया। सभी बन्धनों के प्रति विरोध की भावना आपके लेखन की विशेषता है। 'अनामिका', 'परिमल', 'गीतिका', 'तुलसीदास', 'राम की शक्तिपूजा', 'आराधना', 'गीत गुंज' आदि आपके काव्य-संग्रह हैं। 'अलका', 'अप्सरा', 'निरुपमा' आदि आपके उपन्यास हैं। 'लिली', 'सखी', 'सुकुल की बीवी' कहानियाँ हैं। आपके साहित्य में ओजगुण की प्रधानता दिखाई देती है।

संदर्भ सहित व्याख्या

वह तोड़ती पत्थर,
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर-
वह तोड़ती पत्थर।
नहीं छायादार
पेड़, वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन,
प्रिय कर्मरत मन

संदर्भ :-
प्रस्तुत कवितांश 'तोड़ती पत्थर' नामक पाठ से संकलित है। इसके कवि श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला हैं। आप हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में छायावाद युग के प्रमुख कवि हैं। आपकी कविता सौंदर्य, ओज तथा क्रान्ति के लिए प्रसिद्ध है।

व्याख्या : -
कवि ने इलाहाबाद के मार्ग पर एक मज़दूरिन को देखा। वह गरमी के मौसम में पत्थर तोड़ने का काम कर रही थी। वह अत्यंत कठिन वातावरण था। लेकिन वह प्रेम से अपना काम कर रही थी। उसे वहाँ बैठने के लिए छायादार पेड़ भी नहीं था।

विशेषता :-
प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने एक मज़दूरिन के सौंदर्य का चित्रण किया। उस समय, जहाँ काव्यनायिका एक संभ्रांत परिवार से ही थी, उन्होंने इस परंपरा को बदलकर एक मजदूरिन को अपनी कविता की नायिका बनाया।

चढ़ रही थी धूप,

गर्मियों के दिन,

दिवा का तमतमाता रूप,

उठी झुलसाती हुई लू,

रुई ज्यों जलती हुई भू,

गर्द चिनगी छा गयी,

प्रायः हुई दुपहर –

वह तोड़ती पत्थर

संदर्भ :

प्रस्तुत पद्यांश 'तोड़ती पत्थर' नामक पाठ से संकलित है। इसके कवि श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला हैं। आप हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में छायावाद युग के प्रमुख कवि हैं। आपकी कविता सौंदर्य, ओज तथा क्रान्ति के लिए प्रसिद्ध है।

व्याख्या :

कवि ने इलाहाबाद के मार्ग पर एक मज़दूरिन को देखा। वह गरमी के मौसम में पत्थर तोड़ने का काम कर रही थी। कठोर गरमी का समय था। सूरज अपनी पूरी तेजस्विता से चमक रहा है। वह अत्यंत कठिन वातावरण था। भयानक लू चल रही थी। भूमि रुई की भांति जल रही थी। लेकिन वह विनम्र रहकर अपना काम प्रेम से कर रही थी ।

विशेषता:

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने एक मज़दूरिन की दुस्थिति का चित्रण किया। 'तोड़ती पत्थर' कविता की वस्तु की विशेषता यह है कि इसमें एक मज़दूरिन को नायिका के रूप में चित्रित किया गया। इसमें श्रमसौंदर्य का चित्र मिलता है । कवि की सहानुभूति और श्रमिक वर्ग की दुस्थिति का चित्रण भी पाया जाता है।

देखते देखा, मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्न तार,
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से,
जो मार खा रोयी नहीं।
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झुंकार।
एक छन के बाद वह काँपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा
'मैं तोड़ती पत्थर'।

संदर्भ :

प्रस्तुत पद्यांश 'तोड़ती पत्थर' नामक पाठ से संकलित है। इसके कवि श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला हैं। आप हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में छायावाद युग के प्रमुख कवि हैं। आपकी कविता सौंदर्य, ओज तथा क्रान्ति के लिए प्रसिद्ध है।

व्याख्या :

कवि ने इलाहाबाद के मार्ग पर एक मज़दूरिन को देखा। वह गरमी के मौसम में पत्थर तोड़ने का काम कर रही थी। वह अत्यंत कठिन वातावरण था। लेकिन वह प्रेम से अपना काम कर रही थी। उसे वहाँ बैठने के लिए छायादार पेड़ भी नहीं था। वह जब पत्थर तोड रही थी, तब एक प्रकार का संगीत सुनाई दे रहा था जो कुछ क्षण के लिए रूक गया। इससे जो संगीत की धारा बह रही थी, उसमें बाधा आ गयी। उसके माथे से पसीने की बूंदे निकल रही थी। उसने कवि को

अत्यंत करुणास्पद दृष्टि से देखा, जिससे कवि का हृदय पिघल गया। एक बार देखकर फिर वह अपने काम में लीन हो गयी।

विशेषता :

मेहनत करने के लिए विवश श्रमिकवर्ग की वेदना इस कविता की वस्तु है। कविता की नायिका उसी वर्ग से है, जिस वर्ग के खुन-पसीने के कारण सडकें बनती हैं और इमारतें खडी की जाती हैं, किंतु उनके द्वारा निर्मित सड़कों पर किसी दूसरे की गाडियाँ दौडती हैं और उन बंगलों में कोई दूसरा निवास करता है।

'वह तोडती पत्थर' कविता का सारांश

सारांश :- प्रस्तुत कविता में कवि कहते हैं कि उन्होंने एक मज़दूरिन को देखा । वह मज़दूरिन इलाहाबाद की सड़क पर पत्थर तोड़ने का काम कर रही थी । वह भरे यौवन में थी । उसका रंग काला था। पर वह देखने में बहुत सुंदर थी। उसके हाथ में एक बड़ा हथौड़ा था। वह उससे पत्थर तोड़ रही थी। वह समय गर्मियों का था। कड़ी धूप चल रही थी। लू भी चल रही थी। लेकिन उस मज़दूरिन के लिए आश्रय निमित्त जो पेड़ बचा हुआ था वह भी छायादार नहीं था। फिर भी वह अपना काम प्रेम से कर रही थी।

कडी धूप निकल चुकी थी । वह मध्याह्न का समय था। वह अपना काम मेहनत से कर रही थी और पत्थर तोड़ने से जो आवाज आ रही थी, वह कवि के लिए मधुर संगीत जैसा था। उसके सामने सड़क के उस पार घने वृक्ष थे, बड़े भवन भी थे । किन्तु वहाँ उसका प्रवेश निषिद्ध है। वह एक बार कवि की ओर देखती और उस भवन की ओर देखती है। इससे उसके पत्थर तोडनेवाले से जो संगीत आ रहा था वह एक पल के लिए रुक गया। इसीलिए कवि 'छिन्न तार' कहते हैं। अपने श्रम से संगीत की सर्जना करनेवाली उस युवती को कवि 'सहज सितार' कहकर प्रशंसा करते हैं । कवि को जब उसने देखा तब उसके चेहरे का भाव अत्यंत कारुणिक था । कवि कहते हैं कि उसका मुख ऐसा था जैसे कि किसीने उसे मारा हो । उसके ललाट से पसीने की बूँदें आकर गिर रही थीं। उसके सारे शरीर पर गर्द के कण छाये हुए थे। कवि को ये धूलिकण 'चिनगारी' की तरह दिखते हैं। कवि को एक बार देखकर फिर वह अपने काम में लीन हो गयी। यही पर कविता समाप्त हो जाती है ।

इस कविता में श्रमिक वर्ग के सौंदर्य का चित्रण पाया जाता है । भाषा और शैली अत्यंत सहज है। एक मज़दूरिन को काव्य की नायिका बनाकर कवि ने हिन्दी में एक नये युग का आरंभ किया। इस कविता को प्रगतिवादी कविता की बानगी माना जाता है।

हिमालय के प्रति

कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का परिचय:

रामधारी सिंह 'दिनकर' जी का जन्म बिहार के मुंगेर जिले के सिमरियाघाट में सन् 1908 ई. में हुआ था। बी. ए. के बाद आपने कुछ समय तक अध्यापन का काम किया फिर बिहार राज्य सरकार में रजिस्ट्रार पद पर नियुक्त हो गए। बाद में आपने असहयोग आंदोलन में भी सक्रिय रूप में काम किया। साहित्यिक सेवाओं के कारण आप राज्यसभा के मनोनीत सदस्य के रूप में चुने गए और 'पद्मभूषण' भी आप

-को प्राप्त हुआ था। 'उर्वशी' नामक काव्य के लिए आपको भारतीय ज्ञानपीठ का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। 'रेणुका', 'हुँकार', 'रसवन्ती', 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी', 'परशुराम की प्रतिज्ञा' आदि आपके सफल काव्य हैं।

'संस्कृति के चार अध्याय' दिनकर की अत्यंत प्रसिद्ध गद्य रचना है। इसमें आपने समूची भारतीय संस्कृति को चार अध्यायों में बांटा और यह रचना हिंदी गद्य की अद्‌भुत बानगी प्रस्तुत करती है। राष्ट्रीयता, देशभक्ति एवं ओज आपके साहित्य की विशेषताएँ हैं। दिनकर जी का लेखन अथक प्रेरणा से भरा हुआ था। उनकी कविताओं में स्वतंत्रता संग्राम के प्रेरणास्पद भाव और राष्ट्रीय उत्कृष्टता की भावना अद्वितीय है। उन्होंने अपने काव्य में भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया और राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रेरणा प्रदान की। रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविताएँ आज भी हमारे दिलों में जीवित हैं और हमें राष्ट्रीय और सामाजिक जागरूकता दिलाने का काम करती हैं। उनका योगदान भारतीय साहित्य के महान कवियों में अविस्मरणीय है और उनकी उपलब्धियों ने उन्हें देशवासियों के हृदय में स्थान बनाया है।।

प्रस्तुत कविता 'रेणुका' से संकलित है। इसमें कवि हिमालय के द्वारा अतीत के गौरवमय इतिहास का स्मरण दिलाते हैं । कविता के द्वारा वे सारे देश को जगाना चाहते हैं। कविता में हिमालय मात्र एक पर्वत-माला नहीं बल्कि भारतीय पौरुष एवं सांस्कृति वैभव का प्रतीक बन गया।

हिमालय के प्रति

मेरे नगपति! मेरे विशाल !
साकार, दिव्य, गौरव विराट्,
पौरुष की पुंजीभूत ज्वाल,
मेरी जननी के हिम-किरीट,
मेरे भारत के दिव्य भाल
मेरे नगपति! मेरे विशाल !

युग-युग अजेय, निर्बन्ध मुक्त,
युग-युग गर्वोन्नत, नित महान,
निस्सीम व्योम में तान रहे,
युग से किस महिमा का वितान ?
कैसी अखण्ड यह चिर समाधि ?

यतिवर कैसा यह अमर ध्यान
तू महा शून्य में खोज रहा
किस जटिल समस्या का निदान ?
उलझन का कैसा विषम जाल?
मेरे नगपति! मेरे विशाल !

ओ, मौन तपस्या - लीन यति
पल-भर को तो कर दृगोन्मेष !
रे ज्वालाओं से दग्ध, विकल
है तड़प रहा पद पर स्वदेश !

सुख सिन्धु, पंचनद, ब्रह्मपुत्र,
की अमिय-धार, गंगा यमुना
जिस पुण्य भूमि की ओर बही
तेरी विगलित करुणा अपार।

जिसके द्वारों पर खड़े क्रान्त
सीमापति ! तूने की पुकार।
"पद - दलित इसे करना पीछे,
पहले ले मेरा सिर उतार"।

उस पुण्यभूमि पर आज तपी!
आन पड़ा संकट कराल!
व्याकुल तेरे सुत तड़प रहे,
डस रहे चतुर्दिक विविध व्याल!

मेरे नगपति! मेरे विशाल!
कितनी मणियाँ लुट गयी?
मिटा कितना मेरा वैभव अशेष ?
तू ध्यान मग्न ही रहा, इधर
वीरान हुआ प्यारा स्वदेश!

ले अंगडाई उठ, हिले धरा,
कर निज विराट् स्वर में निनाद,
तू शैलराट् ! हुँकार भर,

फट जाये कुहा, भागे प्रमाद!
तू मौन त्याग कर सिंहनाद,
रे तपी आज तप का न काल!
नव युग शंख ध्वनि जगा रही,
तू जाग, जाग मेरे विशाल!

मेरी जननी के हिम-किरीट!
मेरे भारत के दिव्य भाल!
नव युग शंख ध्वनि जगा रही!
जागो नगपति! जागो विशाल!

('रेणुका' काव्य से संकलित)

लघु प्रश्न :

1) "हिमालय के प्रति" कविता के कवि कौन हैं?

उत्तर: "हिमालय के प्रति" कविता के कवि श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं।

2) रामधारी सिंह 'दिनकर' का परिचय दीजिए?

उत्तरः श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' हिन्दी साहित्य के प्रख्यात कवि एवं सशक्त गद्यलेखक हैं। आपने 'उर्वशी' काव्य के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त किया । हिन्दी में ओजपूर्ण कविता के लिए आप प्रसिद्ध हैं।

3) 'हिमालय के प्रति' कविता की विशेषताओं को रेखांकित करें।

उत्तरः 'दिनकर' जी ने इस कविता में हिमालय का मानवीकरण किया। कविता में हिमालय मात्र पर्वत नहीं, भारतीय शक्ति एवं पौरुष का प्रतीक है । कवि हिमालय के माध्यम से समूची भारतीय जनता को संबोधित करते हैं।

4) हिमालय की करुणा भारत के प्रति किस प्रकार थी?

उत्तरः भारत में प्रवाहित गंगा, यमुना, पंचनदियाँ, ब्रह्मपुत्र- ये सब हिमालय की करुणा के प्रमाण हैं। क्यों कि इन सबका उद्गम स्थान हिमालय ही है।

5) हिमालय ने किसप्रकार भारत की रक्षा की थी?

उत्तरः युगों से भारत के सीमारक्षक बनकर हिमालय ने इस देश की रक्षा की थी। कवि के अनुसार कई सदियों तक भारत निर्बन्ध और अजेय रहा है तो इसका कारण हिमालय ही है।

6) हिमालय के जाग जाने से क्या होगा?

उत्तरः हिमालय के जागने से लोगों के भ्रम दूर हो जायेंगे। जनता हिमालय के प्रति

संन्दर्भ सहित व्याख्या

मेरे नगपति! मेरे विशाल!
साकार, दिव्य, गौरव विराट्,
पौरुष की पुंजीभूत ज्वाल,
मेरी जननी के हिम-किरीट,
मेरे भारत के दिव्य भाल
मेरे नगपति! मेरे विशाल!

संदर्भ :

यह कवितांश 'हिमालय के प्रति' नामक पाठ से संकलित है। इसके कवि श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं। वे हिन्दी साहित्य के प्रख्यात कवि एवं सशक्त गद्यलेखक हैं। उन्हें 'उर्वशी' काव्य के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। हिन्दी में ओजपूर्ण कविता के लिए आप प्रसिद्ध हैं। प्रस्तुत कविता 'रेणुका' नामक संकलन से है। इसमें कवि हिमालय का मानवीकरण करते हैं।

व्याख्या :

इस कविता में कवि दिनकर जी हिमालय को संबोधित कर रहे हैं। वे कहते हैं - "हे सारे पर्वतों के राजा हिमालय ! भारतमाता के लिए तुम हिमकिरीट हो । तुम अत्यंत विशाल हो । भारतमाता का दिव्य भाल हो। पौरुष का साकाररूप हो । भारत के गौरव का तुम प्रतीक हो।''

विशेषता :

इस कविता में कवि हिमालय का मानवीकरण करते हैं । कविता वीररस प्रधान है। 'नगपति' का प्रयोग हिमालय के लिए अत्यंत सार्थक बन पडा।

सुख सिन्धु, पंचनद, ब्रह्मपुत्र,
की अमिय-धार, गंगा यमुना
जिस पुण्य भूमि की ओर बही
तेरी विगलित करुणा अपार।

संदर्भ :

यह कवितांश 'हिमालय के प्रति' नामक पाठ से संकलित है। इसके कवि श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं। वे हिन्दी साहित्य के प्रख्यात कवि एवं सशक्त गद्यलेखक हैं। उन्हें 'उर्वशी' काव्य के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। हिन्दी में ओजपूर्ण कविता के लिए आप प्रसिद्ध हैं। प्रस्तुत कविता 'रेणुका' नामक संकलन से है। इसमें कवि हिमालय का मानवीकरण करते हैं।

व्याख्या :

इस कविता में कवि दिनकर जी हिमालय को संबोधित कर रहे हैं। वे कहते हैं - "हे सारे पर्वतों के राजा हिमालय! भारतमाता के लिए तुम हिमकिरीट हो। तुम अत्यंत विशाल हो। तुम्हारे कारण कई युगों तक भारत अजेय रहा। भारत में गंगा, यमुना आदि कई नदियाँ तुम्हारी करुणा का ही विगलित रूप है।" इसका अर्थ यह है कि बहुत समय तक हिमालय ने शतृओं को भारत में आने नहीं दिया, मानों कह रहा हो कि यदि भारत को जीतना है तो पहले मुझे जीतकर जाना! पर कई शताब्दियों तक भारत को कोई जीत नहीं पाया।

विशेषता :

इस कविता में कवि हिमालय का मानवीकरण करते हैं। भारत में प्रवाहित गंगा, यमुना, पंचनदियाँ, ब्रह्मपुत्र- ये सब हिमालय की करुणा के प्रमाण हैं। क्यों कि इन सबका उद्गम स्थान हिमालय ही है।

तू मौन त्याग कर सिंहनाद,
रे तपी आज तप का न काल!
नव युग शंख ध्वनि जगा रही,
तू जाग, जाग मेरे विशाल!

संदर्भ :

यह कवितांश 'हिमालय के प्रति' नामक पाठ से संकलित है। इसके कवि श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं। वे हिन्दी साहित्य के प्रख्यात कवि एवं सशक्त गद्यलेखक हैं। उन्हें 'उर्वशी' काव्य के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। हिन्दी में ओजपूर्ण कविता के लिए आप प्रसिद्ध हैं। प्रस्तुत कविता 'रेणुका' नामक संकलन से है। इसमें कवि हिमालय का मानवीकरण करते हैं। आपकी सर्वप्रसिद्ध गद्य रचना 'संस्कृति के चार अध्याय' है। आपको हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक विचारधारा के कवि माना जाता है। वीररस आपकी कविताओं का मुख्य रस है।

व्याख्या

इस कविता में कवि दिनकर जी हिमालय को संबोधित कर रहे हैं। वे कहते हैं "हे सारे पर्वतों के राजा हिमालय! भारत की जनता आज संकट में पड़ी है। इस समय तुम जैसे वीरों को मौन रहना नहीं चाहिए। इसलिए अब तुम मौन का त्याग करो। एकबार गर्जन करके उठो। उस सिंहनाद से

सारे लोगों के भ्रम दूर हो जायेंगे। यह तपस्या का समय नहीं बल्कि- युद्ध का समय है। नवयुग की शंखध्वनि सुनो..जागो।"

विशेषता

कविता में वीररस की प्रधानता है। कवि हिमालय के बहाने राष्ट्र को जागृत करते हैं। जागरण चेतना का पर्याय है और निद्रा जडता का। इसलिए कवि राष्ट्र में चेतना भरने का संदेश दे रहे हैं।

'हिमालय के प्रति' कविता का सारांश

इस कविता में कवि दिनकर जी हिमालय को संबोधित कर रहे हैं । वे कहते हैं सारे पर्वतों के राजा हिमालय! भारतमाता के लिए तुम हिमकिरीट हो । पौरुष का साकाररूप हो। तुम आकाश की तरफ सिर उठाकर अमर ध्यान करते हुए चिर समाधि में मग्न हो । इस प्रकार तुमको देखते हुए लगता है कि तुम एक यति हो । भारत की सीमाओं के तुम रक्षक हो। तुम्हारे कारण कई युगों तक भारत अजेय रहा। भारत में गंगा, यमुना आदि कई नदियाँ तुम्हारी करुणा का ही विगलित रूप है। परन्तु हिमालय...आज तुम्हारा वही देश समस्याओं से पीडित है । एकबार आँख उठाकर देखो। देश पर विदेशी शासन का आधिपत्य हो गया । तुम ध्यानमग्न हो लेकिन इस बीच सारा देश लुटकर खाली हो गया। इस समय तुम जैसे वीरों को मौन रहना नहीं चाहिए । इसलिए अब तुम मौन का त्याग करो। एकबार गर्जन करके उठो । उस सिंहनाद से सारे लोगों के भ्रम दूर हो जायेंगे। यह तपस्या का समय नहीं- युद्ध का समय है । नवयुग की शंखध्वनि सुनो.. जागो ।"

भारत पर अंग्रेजों का राज चल रहा है, इसलिए भारत के लोगों में असंतोष भरा हुआ है। लेकिन उनकी पौरुषशक्ति अभी निद्रावस्था में है और सुषुप्ति में राष्ट्र की चेतना दबी पडी है। इस चेतना को झकझोरकर सारे राष्ट्र को नयी दिशा प्रदान करने का साहस एक जागृत कवि ही कर सकता है। और यह कार्य इस कविता में दिनकर जी कर रहे हैं। उनके अनुसार हिमालय इस देश की पौरुषप्रधान चेतना का प्रतीक है। अर्थ यह हुआ कि वे हिमालय के बहाने देश को संबोधित करते हैं और इतिहास के उन क्षणों तक जनता को ले जाते हैं जब भारत अजेय और निर्बंध था। भारत राष्ट्र की उस शक्ति की ओर दिनकर जी संकेत करते हैं जो कि सारे युग को हिलादेनेवाली प्रबल शक्ति थी।

इस कविता में कवि हिमालय का मानवीकरण करते हैं। भारत में प्रवाहित गंगा, यमुना, पंचनदियाँ, ब्रह्मपुत्र- ये सब हिमालय की करुणा के प्रमाण हैं। क्यों कि इन सबका उद्गम स्थान हिमालय ही है। कवि हिमालय के बहाने राष्ट्र को जागृत करते हैं। जागरण चेतना का पर्याय है और निद्रा जडता का। इसलिए कवि राष्ट्र में चेतना भरने का संदेश दे रहे हैं। कविता में वीर रस की प्रधानता है और भाषा-शैली संस्कृतनिष्ठ तथा प्रवाहमान है।

तृतीय खण्ड

मैं नरक से बोल रहा हूँ! (व्यंग्य)

लेखक हरिशंकर परसाई का परिचय :

श्री हरिशंकर परसाई जी को हिन्दी साहित्य में व्यंग्य-हास्य विधा के अत्यंत सफल लेखक माना जाता है। आपका जन्म मध्यप्रदेश के इटारसी प्रान्त में सन् 1924 ई. में जमानी नामक गाँव में हुआ था। आपने एम. ए. की उपाधि नागपुर विश्वविद्यालय से प्राप्त की। इसके बाद कई सालों तक अनेक महाविद्यालयों में प्राध्यापक - पद पर कार्यरत रहे। इसके उपरान्त नौकरी छोड़कर स्वतंत्र लेखन के कार्य में जीवन पर्यन्त जुडकर रहे ।

राजनीति के षडयन्त्र, सामाजिक अलगाव एवं बिखराव, सांस्कृतिक पतन, मूल्यों का ह्रास, खोखलापन एवं धार्मिक अंधविश्वास, दल-गुटबन्दियाँ, भाई-भतीजावाद आदि अनेक ज्वलन्त समस्याओं पर आपकी कलम निर्बाधगति से चल पड़ी। आपने उपर्युक्त समस्याओं का निदान जन-चेतना के रूप में देखा और जन-चेतना को जुटाने के लिए व्यंग्य का एक सशक्त साधन के रूप में प्रयोग किया। परसाई जी की रचनाओं में 'हँसते हैं और रोते हैं', 'तब की बात और थी', 'जैसे उनके दिन फिरे', 'अपनी अपनी बीमारी', 'बेईमानी की परत', 'भूत के पाँव पीछे' आदि प्रमुख हैं। ,

प्रस्तुत व्यंग्य-रचना में आपने यह संकेत दिया कि बिना संघर्ष के बिना जीवन में कुछ भी हासिल नहीं होगा । जीवन्त भाषा एवं चौंकनेवाले जीवन - यथार्थ इस रचना की अन्य विशेषताएँ हैं।

मैं नरक से बोल रहा हूँ!

“हे पत्थर पूजनेवालो! तुम्हें जिन्दा आदमी की बात सुनने का अभ्यास नहीं, इसलिए मैं मरकर बोल रहा हूँ। जीवित अवस्था में तुम जिसकी ओर आँख उठाकर नहीं देखते उसकी सड़ी लाश के पीछेजुलूस बनाकर चलते हो। जिन्दगी-भर तुम जिससे नफ़रत करते रहे उसकी कब्र पर चिराग जलाने जाते हो। मरते वक्त तक जिसे तुमने चुल्लू भर पानी नहीं दिया, उसके हाड़ गंगाजी ले जाते हो। अरे, तुम जीवन का तिरस्कार और मरण का सत्कार करते हो। इसीलिए मैं मरकर बोल रहा हूँ। मैं नरक से बोल रहा हूँ!

मौत भूख मगर मुझे क्या पड़ी थी कि जिन्दगी-भर बेजुबान रहकर, यहाँ नरक के कोने से बोलता ! पर यहाँ तक बात ऐसी सुनी कि मुझ अभागे की मौत को लेकर तुम्हारे यहाँ के बड़े-बड़े लोगों में चखचख हो गयी। मैंने सुना कि तुम्हारे यहाँ के मंत्री ने संसद में कहा कि मेरी भूख से नहीं हुई, मैंने आत्महत्या कर ली थी । मारा जाऊँ और खुद ही मौत का जिम्मेदार ठहराया जाऊँ? भूख से मरूँ और भूख को मेरे मारने का श्रेय न मिले ? 'अन्न..अन्न' की पुकार करता मर जाऊँ और मेरे मरने के कारण में भी अन्न का नाम न आवे ? लेकिन खैर, मैं यह सब भी बरदाश्त कर लेता । जिन्दगी भर तिरस्कार का स्वाद लेते-लेते सहानुभूति मुझे उसी प्रकार अरुचिकर हो गयी थी जिस प्रकार शहर के रहनेवाले को देहात का शुद्ध घी । लेकिन आज ही एक घटना और यहाँ इस लोक में घट गयी।

हुआ यह कि स्वर्ग और नरक को जो दीवार अलग करती है, उसकी सेंध में से आज सबेरे मेरे कुत्ते ने मुझे देखा और 'कुर-कुर' करके प्यार जताने लगा । और मेरे आश्चर्य और क्षोभ का ठिकाना न रहा कि मैं यहाँ नरक में और मेरा कुत्ता उस ओर स्वर्ग में । यह कुत्ता- मेरा बड़ा प्यारा कुत्ता, युधिष्ठिर के कुत्ते से अधिक ! जबसे मेरी स्त्री एक धनी के साथ भाग गयी थी तभी से यह कुत्ता मेरा संगी रहा, ऐसा कि मरा भी साथ ही । कभी मुझे छोड़ा नहीं इसने । बगल का सेठ इसे पालना चाहता था, सेठानी तो इसे बेहद प्यार करती, परयह मुझे छोड़कर गया नहीं, लुभाया नहीं । सो मुझे सुख ही हुआ कि वह स्वर्ग में आनंद से है पर मेरे अपने प्रति किये गये अन्याय को तो भुलाया नहीं जा सकता। और भाई! यह तुम्हारा मनुष्यलोक तो है नहीं जहाँ

फरियाद नहीं सुनी जाती, जहाँ फरियादी को ही दण्ड दिया जाता है, जहाँ लालफीते के कारण आग लगने के साल भर बाद बुझाने का आर्डर आता है। यहाँ तो फरियाद तुरंत सुनी जाती है। सो मैं भी भगवान के पास गया और प्रार्थना की, "हे भगवान् । पृथ्वी पर अन्याय भोगकर इस आशा से यहाँ आया कि न्याय मिलेगा, पर यह क्या कि मेरा कुत्ता तो स्वर्ग में और मैं नरक में ! जीवन-भर कोई बुरा काम नहीं किया। भूख से मर गया, पर चोरी नहीं की । किसी के आगे हाथ नहीं फैलाया और यह कुत्ता - जैसे कुत्ता होता है वैसा ही तो है यह । कई बार आपका भोग खाने पिटा यह । और इसे आपने स्वर्ग में रख दिया...!"

और भगवान ने एक बड़ी बही देखकर कहा कि इसमें लिखा है कि तुमने आत्महत्या की । मैंने कहा कि नहीं महाराज, मैं भूख मरा। मैंने आत्महत्या नहीं की। पर वे बोले, "नहीं, तुम झूठ हो। तुम्हारे देश के अन्न मन्त्री ने लिखा है कि तुमने आत्महत्या की तुम्हारे शरीर के पोस्टमार्टम में यह बात सिद्ध हुई है। " और भगवान आसमान से गिरते-गिरते बचे, जब मैंने कहा कि महाराज, यह रिपोर्ट झूठ है। मेरा पोस्टमार्टम हुआ ही नहीं । अरे मैं तो जला दिया गया था। इसके दस दिन बाद संसद में प्रश्नोत्तर हुए। तो क्या मेरी राख का पोस्टमार्टम हुआ? और तब मैंने उन्हें पूरा हाल सुनाया। लो तुम भी सुनो। तुम नहीं जानते मैं कहाँ जिया..कहाँ रहा.. कहाँ मरा! दुनिया इतनी बड़ी है कि कोई किसी का हिसाब नहीं रखता ।

और तुम क्या जानो कि जब मेरी साँस चलती थी तब भी मैं जिन्दा नहीं था। मैं इस अर्थ में जीवित था कि मैं रोज मृत्यु को टालता जाता था। वास्तव में तो मैं जन्म के पश्चात एक क्षण ही जीवित रहा और दूसरे क्षण से मेरी मौत शुरू हो गयी । तो बाजार की उस अट्टालिका को तो जानते हो। उसी के पीछे एक ओर से पाखाना साफ करने का दरवाजा है और दूसरी ओर दीवार के सहारे मेरी छपरी। अट्टालिका का मालिक मेरी छपरी तोड़कर वहाँ भी अपना पाखाना बनाना चाहता था। अगर मैं मर न जाता तो गरीब आदमी की झोंपड़ी पर अमीर के पाखाने की विजय भी इन आँखों से देखता । अब तो तुम मेरा स्थान जान गये होंगे- आदमी से अधिक तो तुम अट्टालिका को पहचानते हो । अट्टालिका के सहारे आदमी को जानना तो तुम्हें खूब आता है। बस यही झोंपड़ी में रहा मैं। मेरे आस पास अन्न ही अन्न था। दीवाल के उस पार से चूहे आते वे

दिनपर-दिन मोटे होते जाते और दो रोज तक तो वे इसलिए नहीं आये कि निकालने का थोड़ा मार्ग बनाते रहे। पर मैं फिर भी भूख रहा। बेकार था। अनाज दस रूपये सेर था। इससे तो मेरे लिए मौत सस्ती थी !

आखिर मेरी मौत भी आयी। जिस दिन आयी, उस दिन अट्टालिका के उस पारवाले रईस के लड़के की शादी थी। बड़ा अमीर था। सारा गाँव जानताथा कि उसके पास हजारों बोरे अन्न था, पर कोई कुछ नहीं कहता था। पुलिस उसकी रक्षा करती थी। और उस दिन मेरी मौत धीरे - धीरे काला पंजा बढ़ाती आयी थी। मेरे पेट में ऐंठ आयी, आँखें धुँधली पड़ी। दीवाल के उस पार पकवानों की सुगन्ध आ रही थी। यही सन्तोष रहा कि पकवानों के बीच मेरी मौत हुई !

मौत के ज़रा पहले मेरा प्यारा कुतता बरबस दीवाल केउस पार घुस गया और पकवान खा गया। मालिक ने उसे खींचकर एक डण्डा मारा और वह कराहता हुआ मेरे पास आकर पड़ गया। चीखता रहा, चीखता रहा। मेरे भी प्राण निकल रहे थे। पर मुझे जानवर के सामने चीखने में लज्जा आयी। इधर मेरे पेट में आखिरी ऐंठ आयी और पंछी ने पिंजरा खाली किया, उधर मेरे कुत्ते की भी दम टूटी। डण्डे की चोट बड़े मर्म की थी। दोनों मरे.. एक साथ मरे..फर्क इतना कि वह खाकर मरा और मैं बिना खाये।

उधर बारात उठी, इधर चाण्डालों ने टीन की गाड़ी में मुझे पटककर घसीटा। सड़क के उस ओर से अमीर के लड़के की बारात जा रही थी, इस ओर से मेरी सरकारी अर्थी। सरकार ने भोजन का प्रबन्ध नहीं किया था, पर मरनेवालों की लाशों को दफनाने का बहुत अच्छा इन्तजाम किया था। उधर बारात के पीछे मंगल गान हो रहा था। मेरी लाश के पीछे एक भी रोनेवाला नहीं था। ऐसी सफाई से मरा कि किसी को कष्ट न हुआ, कुत्ते तक को नहीं, बारात पहुँच गयी थी गोले छूट रहे थे, और इधर अपर्याप्त लकड़ी में मेरी हड्डियाँ चटचटा रही थीं।

ऐसा मरा। और मरकर यहाँ जब आया तो मुझे कुछ दुख नहीं हुआ। मैंने प्रतिवाद करना सीखा नहीं था और यह स्थान भी उससे ज्यादा खराब नहीं था जहाँ मैं जिन्दगी भर रह चुका था।

कहानी भगवान ने सुनी। बोले, तुम भूख से मरे न। फिर भी तुम नरक में रहोगे और यह कुत्ता स्वर्ग में रहेगा। और यह तुम्हारे बगल का कमरा उस झूठे मन्त्री के लिए खाली होगा!

मैंने भगवान के पैर पकड़ लिये। बोला, "भगवन्, यह कैसा न्याय है?"

वे बोले, "मूर्ख कायर, तू कुत्ते से भी हीन है। बेचारा कुत्ता दीवाल को लाँघकर घुस गया और खाना खा आया। और तू आदमी कहलाने वाला, हाय-हाय करके मर गया। तू दीवाल लाँघ नहीं सकता था ? दीवाल तोड़ नहीं सकता था ? "

"लेकिन भगवान!" मैंने कहा, "वह दीवाल कैसे तोड़ता? कैसे लाँघता? यह पाप न होता?"

भगवान ने क्रोध से कहा, "पाप-पुण्य के झमेले में पड़नेवाले कायर! वह दीवार क्या मेरी बनायी हुई है? तमाम दीवालें आदमियों ने खड़ी की हैं! और तू उन्हें तोड़ने में पाप-पुण्य देखता है? मूर्ख! तेरा कुत्ता तुझसे ज्यादा समझदार है। वह घुस गया, खाया और डण्डे की मार से मरकर यहाँ आ गया। उसमें मनुष्यत्व है, तुझमें पशुत्व भी नहीं? मैंने तुम्हें बुद्धि दी.. हाथ-पैर दिये.. कार्य - शक्ति दी है - और अकर्मण्य, बुजदिल कीड़े- सा मर गया। मनुष्यों ने मुझे बहुत निराश किया, अब मैं कुत्ते-ही- कुत्ते निर्माण करने का विचार कर रहा हूँ। तुम जैसे अकर्मण्य, कायर, भीरु, मूर्ख को नरक नहीं तो क्या इन्द्रासन मिलेगा?"

मैं नरक में ढ़केल दिया गया। और मैं इस कोने से तुमसे कह रहा हूँ कि हे मेरे देशवासियो! मेरी जैसी मौत न मरना, मेरे कुत्ते की तरह मरना!"

लघु प्रश्न

1. 'मैं नरक से बोल रहा हूँ' रचना किस विधा की है?

उत्तर: 'मैं नरक से बोल रहा हूँ' हिंदी साहित्य में व्यंग्य विधा की रचना है।

2. लेखक हरिशंकर परसाई का लघु परिचय दीजिए।

उत्तर: लेखक हरिशंकर परसाई हिंदी साहित्य के जाने माने व्यंग्यकार हैं। 'भूत के पाँव पीछे', 'जैसे उनके दिर फिरे', 'सदाचार का तावीज़', 'समय पर मिलनेवाले' इत्यादि आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। समाज में चेतना लाने के लिए आपने व्यंग्य का सशक्त इस्तेमाल किया।

3. हरिशंकर परसाई की सर्जनात्कम प्रतिभा को चंद शब्दों में रेखांकित कीजिए।

उत्तर: राजनीति के षडयन्त्र, सामाजिक अलगाव एवं बिखराव, सांस्कृतिक पतन, मूल्यों का ह्रास, खोखलापन एवं धार्मिक अंधविश्वास, दल-गुटबन्दियाँ, भाई-भतीजावाद आदि अनेक ज्वलन्त समस्याओं पर आपकी कलम निर्बाधगति से चल पड़ी। आपने उपर्युक्त समस्याओं का निदान जन-चेतना के रूप में देखा और जन-चेतना को जुटाने के लिए व्यंग्य का एक सशक्त साधन के रूप में प्रयोग किया।

4. नरकवासी के साथ कौन मरा है?

उत्तर: नरकवासी के साथ उसका पालतू कुत्ता भी मरा है।

5. इस व्यंग्य के द्वारा हरिशंकर परसाई कहना क्या चाहते हैं?

उत्तर: प्रस्तुत व्यंग्य-रचना में लेखक ने यह संकेत दिया कि बिना संघर्ष के बिना जीवन में कुछ भी हासिल नहीं होगा। जीवन्त भाषा एवं चौंकनेवाले जीवन- यथार्थ इसकी अन्य विशेषताएँ हैं।

5. कुत्ते को स्वर्ग और मनुष्य को नरक क्यों मिला?

उत्तर: कुत्ते ने आहार के लिए संघर्ष किया और स्वर्ग पा लिया। आदमी ने जिंदगीभर कुछ काम नहीं किया और बुजदिल कीडे की तरह मर गया, इसलिए उसे नरक मिला।

संदर्भ सहित व्याख्या

1. अरे, तुम जीवन का तिरस्कार और मरण का सत्कार करते हो। इसीलिए मैं मरकर बोल रहा हूँ। मैं नरक से बोल रहा हूँ!

संदर्भ

यह वाक्य 'मैं नरक से बोल रहा हूँ' नामक व्यंग्य रचना से संकलित है। इसके लेखक हरिशंकर परसाई हिंदी साहित्य के जाने माने व्यंग्यकार हैं। 'भूत के पाँव पीछे', 'जैसे उनके दिर फिरे', 'सदाचार का तावीज़', 'समय पर मिलनेवाले' इत्यादि आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। समाज में चेतना लाने के लिए आपने व्यंग्य का सशक्त इस्तेमाल किया। प्रस्तुत पंक्तियाँ एक नरकवासी जीवित लोगों को संबोधित करके कह रहा है।

व्याख्या

एक आदमी को भगवान ने नरक का दण्ड दिया। वह आदमी जिंदगीभर कुछ नहीं किया और भूख से ही चल बसा। इधर भूलोक में संसद में वार्तालाप होने लगा कि उस व्यक्ति की मौत भूख से नहीं, किसी दूसरे कारणवश हो गयी। इसलिए वह आदमी दुखित होकर अपनी मौत की असली कहानी सुना रहा है और जीवित लोगों को संबोधित करके कह रहा है कि वह नरक से बोल रहा है।

विशेषता

राजनीति के षडयन्त्र, सामाजिक अलगाव एवं बिखराव, सांस्कृतिक पतन, मूल्यों का ह्रास, खोखलापन एवं धार्मिक अंधविश्वास, दल-गुटबन्दियाँ, भाई-भतीजावाद आदि अनेक सामाजिक एवं राजनैतिक समस्याओं का चित्रण हरिशंकर परसाई की व्यंग्य रचनाओं की विशेषता है। प्रस्तुत रचना भी इसका अपवाद नहीं।

2. अनाज दस रुपये सेर था, इससे मेरी मौत सस्ती थी!

संदर्भ

यह वाक्य 'मैं नरक से बोल रहा हूँ' नामक व्यंग्य रचना से संकलित है। इसके लेखक हरिशंकर परसाई हिंदी साहित्य के जाने माने व्यंग्यकार हैं। 'भूत के पाँव पीछे', 'जैसे उनके दिर फिरे', 'सदाचार का तावीज़', 'समय पर मिलनेवाले' इत्यादि आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। समाज में चेतना लाने के लिए आपने व्यंग्य का सशक्त इस्तेमाल किया। प्रस्तुत पंक्तियाँ एक नरकवासी जीवित लोगों को संबोधित करके कह रहा है।

व्याख्या

एक आदमी को भगवान ने नरक का दण्ड दिया। वह आदमी जिंदगीभर कुछ नहीं किया और भूख से ही चल बसा। इधर भूलोक में संसद में वार्तालाप होने लगा कि उस व्यक्ति की मौत भूख से नहीं, किसी दूसरे कारणवश हो गयी। इसलिए वह आदमी दुखित होकर अपनी मौत की असली कहानी सुना रहा है और जीवित लोगों को संबोधित करके कह रहा है कि वह नरक से बोल रहा है। वह कहता है कि भूलोक में जिंदगी बहुत बुरीतरह से जीना पडता है और सभी व्यापारी जनता को लूटते हैं। अनाज के दाम बढ गये हैं और हर एक व्यक्ति दूसरे का शोषण करने में लगा है।

विशेषता

हरिशंकर परसाई की व्यंग्य रचनाएँ उनकी सर्जनात्मक शक्ति के परिचायक हैं। लेखक अपने व्यंग्य के माध्यम से समाज के खोखलेपन की ओर संकेत करते हैं। यहाँ भारतीय स्वाधीनता प्राप्ति के तुरंत बाद के सामाजिक शोषण का चित्रण किया गया है। राजनीति के षडयन्त्र, सामाजिक अलगाव एवं बिखराव, सांस्कृतिक पतन, मूल्यों का ह्रास, खोखलापन एवं धार्मिक अंधविश्वास, दल-गुटबन्दियाँ, भाई-भतीजावाद आदि अनेक सामाजिक एवं राजनैतिक समस्याओं का चित्रण हरिशंकर परसाई की व्यंग्य रचनाओं की विशेषता है। प्रस्तुत रचना भी इसका अपवाद नहीं।

3. मैंने तुम्हें बुद्धि दी.. हाथ-पैर दिये.. कार्य - शक्ति दी है - और अकर्मण्य, बुजदिल कीड़े- सा मर गया।

संदर्भ

यह वाक्य 'मैं नरक से बोल रहा हूँ' नामक व्यंग्य रचना से संकलित है। इसके लेखक हरिशंकर परसाई हिंदी साहित्य के जाने माने व्यंग्यकार हैं। 'भूत के पाँव पीछे', 'जैसे उनके दिर फिरे', 'सदाचार का तावीज़', 'समय पर मिलनेवाले' इत्यादि आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। समाज में चेतना लाने के लिए आपने व्यंग्य का सशक्त इस्तेमाल किया। प्रस्तुत पंक्तियाँ एक नरकवासी जीवित लोगों को संबोधित करके कह रहा है।

व्याख्या

भगवान ने नरक वासी से कहा कि तुम कुत्ते से भी अधम हो। कुत्ता साहस करके दीवार लांघकर गया। भोजन खाकर आ गया। लेकिन तुम भूख के कारण मर गये हो। तुम्हें मैंने बुद्धि और शक्ति दी लेकिन तुमने उसका सदुपयोग नहीं किया। कीडे की तरह मर गये। अतः अकर्मण्यता ही तुम्हारा पाप है... भगवान ने कहा कि कुत्ते ने संघर्ष करके अन्न प्राप्त किया और तुम बुजदिल कीडे की तरह मर गये हो। इसलिए तुम नरक में हो। अर्थ यह कि कुत्ते ने आहार के लिए संघर्ष किया और स्वर्ग पा लिया। आदमी ने जिंदगीभर कुछ काम नहीं किया और बुजदिल कीडे की तरह मर गया, इसलिए उसे नरक मिला।

विशेषता

हरिशंकर परसाई की व्यंग्य रचनाएँ उनकी सर्जनात्मक शक्ति के परिचायक हैं। प्रस्तुत व्यंग्य-रचना में लेखक ने यह संकेत दिया कि बिना संघर्ष के बिना जीवन में कुछ भी हासिल नहीं होगा। जीवन्त भाषा एवं चौंकनेवाले जीवन- यथार्थ इसकी अन्य विशेषताएँ हैं।

सारांश :

प्रस्तुत पाठ के लेखक श्री हरिशंकर परसाई हैं । आप हिन्दी साहित्य के जाने माने व्यंग्यकार हैं। प्रस्तुत रचना के द्वारा आप समाज की तीखी आलोचना करते हैं। प्रस्तुत पाठ एक व्यंग्यात्मक रचना है। प्रस्तुत व्यंग्य का आरंभ एक आदमी के कथन से होता है। वह आदमी नरक से बोल रहा है। जीवित लोगों का सम्मान भूलोक में नहीं होता इसलिए वह मरकर बोल रहा है।

आदमी नरक में है किन्तु उसका कुत्ता तो स्वर्ग में रखा गया है। वह इसका कारण जानना चाहता है। भगवान कहता है कि आदमी आत्महत्या करके मर गया इसलिए वह नरक में है। तब आदमी कहता है कि आत्महत्या से नहीं भूख से वह मर गया। वह भगवान को अपनी कहानी इस प्रकार सुनाता है- जब वह जीवित था तब बेकार और गरीब था। उसे करने के लिए कोई काम नहीं था। एक छपरी में रहता था।

उसकी छपरी एक धनवान के बंगले के पीछे था। वह धनवान इसकी छपरी को हस्तगत करना चाहता था। बंगला और छपरी के मध्य एक दीवार थी। आदमी वह दीवार कभी पार नहीं करता। आदमी के पास एक कुत्ता था। वह बड़ा वफादार था। आदमी अकर्मण्यता के कारण भूखा रहने लगा। भूख के कारण उसकी मौत हो रही थी । इधर एक दिन कुत्ता दीवार पार करके भोजन खाकर आया। धनवान ने उसे डण्डे से मारा तो वह कुत्ता मार खाकर मर गया । उसी समय भूख के कारण आदमी भी मर गया। यह उसका वृत्तांत है।

कहानी सुनकर फिर भगवान कहता है 'तुम नरक में ही रहोगे।' आदमी से वह कहता है 'तुम कुत्ते से भी अधम हो। कुत्ता साहस करके दीवार लांघकर गया। भोजन खाकर आ गया। लेकिन तुम भूख के कारण मर गये हो। तुम्हें मैंने बुद्धि और शक्ति दी लेकिन तुमने उसका सदुपयोग नहीं किया। कीडे की तरह मर गये। अतः अकर्मण्यता ही तुम्हारा पाप है। जो जिन्दगी में साहस नहीं कर सकता, अन्याय का विरोध नहीं कर सकता, उसे यही दण्ड मिलेगा। जो अकर्मण्य है, उसे

नरक ही मिलेगाइन्द्रासन नहीं ।' अतः आदमी अंत में कहता है ' हे देशवासियों.. मेरी तरह अकर्मण्य बनकर मरना नहीं मेरे कुत्ते की तरह साहसी मौत मरो।'

प्रस्तुत व्यंग्य में क्रान्तिकारी विचारधारा है । रचना की शैली बहुत ही प्रभावशाली और रोचक है। भाषा प्रवाहमयी है । कुल मिलाकर हरिशंकर परसाई जी की सफल व्यंग्य रचना है।

चतुर्थ खण्ड नायक का चुनाव

कहानीकार का परिचय

पण्डित श्रीराम शर्मा को हिन्दी में शिकार साहित्य के अद्वितीय लेखक माना जाता है। आपका जन्म उत्तर प्रदेश के 'किरथरा' नामक गाँव में सन् 1896 ई. को हुआ था। आप कुछ वर्षों तक अध्यापक रहे किन्तु इसके उपरान्त आपने स्वतंत्र लेखन एवं संपादन के कार्य किये। 'विशाल भारत' नामक पत्रिका के संपादक के रूप में आपने विशेष ख्याति आर्जित की। शर्माजी स्वयं एक साहसी, सफल और अनुभवी शिकारी होने के कारण शिकार का रोमांचक आनंद पाठकों तक पहुँचाने में सिद्धहस्त हैं। 'शिकार', 'बोलती प्रतिमा', और 'जंगल के जीव' आपकी शिकार संबंधी महत्त्वपूर्ण पुस्तकें हैं। 'सेवाग्राम की डायरी', 'सन् बयालीस के संस्मरण' आदि आपकी अन्य रचनाएँ हैं।

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने फ्रांसीसी अफ्रिका के नेपथ्य में एक रोचक कहानी कहकर साथ ही नैतिक मूल्यों के महत्व का चित्रण करते हैं। लेखक ने अफ्रीकी जंगलों में बसे एक गाँव को कहानी की पृष्ठभूमि के रूप में स्वीकार किया । शर्माजी की अन्य कहानियों की भांति यह भी शिकार प्रधान कहानी है। इसमें शिकार की रोचक घटनाओं के साथ-साथ जंगली जाति के लोगों की सत्यनिष्ठा का भी चित्रण मिलता है। वातावरण का अत्यंत सहज वर्णन इस कहानी की अन्य विशेषता है।

नायक का चुनाव (शिकार साहित्य)

मानव-जीवन में कृतिमता जहाँ एक आवश्यक अंग-सी बन गयी है, वहाँ वह एक अभिशाप भी है। प्राकृतिक जीवन से दूर होकर मनुष्य उच्च स्तर की बातें करता है। शिक्षा, दर्शन और नैतिकता पर वह बड़े बड़े पोथे लिखता है, विज्ञान की दुहाई देता है, पर अधिकांशमें वह सरलता, सच्चाई और नैसगिकता से दूर हटता जाता है। यो अपवाद स्वरूप गांधी, ईसा, बुद्ध, मुहम्मद तथा अन्य व्यक्ति इस दुनिया को कायम रखते हैं। पर सभ्यता की दुनिया से दूर प्रकृति की गोद में पले मानव स्नेह, निष्ठा तथा कर्तव्य पालन में किसी से कम नहीं हैं। स्वास्थ्य और शौर्य में तो वे अद्‌भुत होते हैं। छल-छिद्र उन्हें नहीं भाता। सरलता के तो वे एक प्रकार के अवतार हैं और होते हैं बात पर मिटनेवाले।

फ्राँसीसी अफ्रीका के एक गाँव में, जो चारों ओर से वन-वृक्षों से आच्छादित था, एक दिन वहाँ के नायक का देहांत हो गया। उसका उत्तराधिकारी चुनने के लिए फ्रांसीसी अफसर की अनुमति की जरूरत थी। गाँव के सयाने ने आकर टोटिका - टमना किया। स्त्रियों के करुण क्रन्दन से पेड़ थर्रा से गए। नायक के एकमात्र लड़के सूतो की ओर सबकी नजर थी कि वह अपनी जाति का नायक बनाया जाएगा। पर सूतो को यह आशंका थी कि कहीं उसका प्रतिद्वन्द्वी नक उसके पिता का उत्तराधिकारी न बना दिया जाय। कारण यह था कि शिकार में सूतो का एक हाथ बेकार-सा हो गया था। पूरे तौर से वह उसका उपयोग नहीं कर सकता था और बनक बड़ा ही वाचाल था। फ्राँसीसी अफसरों की खुशामद में भी वह बहुत रहता था। वह स्वस्थ भी था। उसके हाथ में किसी प्रकार की बीमारी भी नहीं थी। चाटुकारी और चातुर्य में उसकी जीभ कतरनी - सी चलती थी। चालाक भी वह एक नंबर का था। सूतो के पिता की मृत्यु का समाचार पाकर मातम-पुरसी करने आने के पूर्व वह सीधा फ्राँसीसी अफसरों के पास चला भी गया था। यों सूतो की प्रतिष्ठा काफी थी। स्वभाव उसका सरल था। शौर्य उसका अपार था और था व्यवहार मेंवह विनम्र। लोगो की नजरे भी उसकी ओर थी। अन्य लोगों के अतिरिक्त एक युवती भी थी जो अपना दिल सूतो को दे चुकी थी। सूतो की मनोव्यथा जानकर उसने कहा, "तुमसे अधिक और वीर यहाँ कौन है? जाति के नायक तुम्हीं बनोगे और मैं तुम्हारी पत्नी बनूँगी।"

“चुप रहो, बकवास करने की जरूरत नहीं है। पता नहीं भगवान क्या करता है। मैं पिता की मृत्यु से क्षुब्ध हूँ। कहाँ उनका जमाना, कहाँ मेरी अल्पशक्ति और अल्पबुद्धि। "

उस युवती का नाम था लिरीना। सूतो ने उपर्युक्त शब्द कहकर जैसे ही अपनी नजर अपने मकाल के दूसरी ओर को की, वैसे ही सामने उसे बनक नजर आया और उसने व्यंग्य से कहा, " सूतो, मैंने तुम्हारी बात सुन ली है। और तुम इतने बहुदा हो कि नायक के मरने पर तुम रंज नहीं मना रहे हो। नायक को तो लोगों की मातम - पुरसी में ही मरना चाहिए।"

'तू तो दोगला है और तू क्या जाने कि नायक का खून कैसा होता है और उसे कैसे मरना चाहिए।" व्यंग्य में सूतो उबला।

विष से भरे सूतो के व्यंग्य से बनक तिलमिला उठा। क्रोध से उसका चेहरा लाल हो गया और कमर से लटकते खंजर पर उसका हाथ पहुँच गया। बिगड़कर बनक ने कहा, “मुझमें भी नायक का खून है। तू कहे तो मैं यही यह साबित करूँ ?"

सूतो कुछ क्षणों के लिए चुप रहा और उसने देखा कि वहाँ पर उपस्थित योद्धाओं में कानाफूसी होने लगी। सूतो ने कहा, "वह दिन भी आ जायेगा बनक। थोड़ा धैर्य रखो।” बनक ने उपहास की हँसी और अपनी शक्ति तथा यौवन के कारण उसने सूतो की उपेक्षा की। खंजर से उसने अपना हाथ हटा लिया और अकड़ता हुआ वहवहाँ जा बैठा जहाँ अन्य योद्धा बैठे थे। अपनी मौखिक जीत पर उसे गर्व था। तेल से चुपड़े उसके सुगठित शरीर पर सूर्य के प्रकाश से ऐसा प्रतीत होता था मानों सुगठित आबनूस की वह प्रस्तर मूर्ति हो। वहाँ बैठकर उसने कहा, " अंग-भंग व्यक्ति ही आधे - पद्धे शब्द कहते हैं। "

इस बीच स्त्रियों और आदमियों में बातें होती रहीं। मातम पुरसी भी जारी रही। उत्तराधिकारित्व के विषय में भी लोगों में चर्चा होती रही और दो-तीन दिनों बाद दो फ्राँसीसी अफसर दो हब्शी सैनिकों के साथ आ गये। उनमें से बड़े अफसर को सूतो ने पहचान लिया क्योंकि उसके बचपन में उसने उसके पिता को अधिकार दिया था।

छोटे फ्राँसीसी अफसर ने बड़े अफसर कमिशनर से सूतो का परिचय कराया। कमिशनर ने सूतो को ऊपर से नीचे तक देखा और उसकी पंगु भुजा पर उसकी निगाह टिक गयी और उसने

देखा कि सूतो की वह भुजा इतनी बलिष्ठ नहीं है जितनी कि दूसरी | कमिशनर ने सूतो से कहा, “तुम्हारा पिता एक महान योद्धा था और उसने बड़ी बुद्धिमत्ता से शासन किया । "

पूर्णिमा की चंद्रिका छिटक रही थी और आस-पास के विशाल वृक्षों में चंद्रमा आँख-मिचौनी-सी खेल रहा था । एक चौड़े मैदान में नृत्य हो रहा था । स्थानीय शराब के दौर चल रहे थे और लोग इस बात के इच्छुक थे कि नायक के निर्णय की बात कब शुरू होती है। सूतो सगर्व अफसरों के सामने उकडूं बैठा था । प्रार्थी की हैसियत से वह एक लंगोटी पहने था । बनक भी उसकी बगल में बैठा था। देखने में वह सूतो से बड़ा था। उसके सफेद दाँतों से उसकी मुस्कराहट प्रस्फुटित हो रही थी । धौंसे पर चोट पड़ी और सबनाचनेवाले एकदम एक-एक कर जमीन पर बैठ गये। शराब का एक दौर और चला और तब फ्राँसीसी कमिशनर ने बात शुरू की | कमिशनर ने कहा, “अब नायक के बारे में चर्चा करनी है । दो उम्मीदवार हैं और दोनों उम्मीदवारों की बात सुनकर फैसला देना है। बनक, अब तुम पहले बात कहो । "।

सुगठित और पुट्ठेदार शरीर एकदम खड़ा हुआ और बनक ने कहा, “ नायक होने का मैं अधिकारी हूँ और मुझे ही नायक होना चाहिए, क्योंकि मैं एक महान योद्धा हूँ । खंजर अथवा भाला चलाने में मुझसे बढ़कर कोई नहीं है । मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। मैं बुद्धिमत्ता से शासन करूँगा क्योंकि मुझमें नायक का खून है । फ्राँसीसी सरकार का मैं सेवक हूँ। अफसर मुझे जानते क्योंकि मैंने उनकी सेवा भी की है। "

तब फ्राँसीस अफसर ने सूतो से संकेत किया कि वह अपनी बात कहे। सूतो धीरे से खड़ा हुआ। वह अपनी भुजा की कमजोरी जानता था। उसकी टाँगों में कंपन हुआ और तब उसने कहा, “मुझे नायक होना चाहिए क्योंकि मैं नायक का पुत्र हूँ। मैं जानता हूँ कि शांति-व्यवस्था कैसे की जाती है । बचपन में मैंने एक सिंह मारा था और पिछले दिनों बिना हथियार के एक बघेरा मारा था। मेरी इच्छा बुद्धिमत्ता से शासन करने की है । "

सूतो को महसूस हुआ कि उसकी बात का असर लोगों पर नहीं पड़ा। उसे अपनी हार - सी प्रतीत हुई। पर उसे अपनी भावना को प्रकट नहीं होने दिया । फ्राँसीसी कमिशनर ने लोगों से पूछा, “पंचायतों और सभाओं में कौन बोलता है ?" एक योद्धा ने कहा, " बनक और उसे ही

नायक होना चाहिए, क्योंकि उसकी बातों में सचाई है । ' “नहीं, सूतो एक महान नायक का पुत्र है और मैं चाहता हूँ उसे ही "अपने पिता का उत्तराधिकारी बनाया जाय।” एक योद्धा ने बात काटकर कहा । और भी कई योद्धा इस विषय पर बोले । कायदा यह था कि जो नायक बनाया जाता था उसको एक अधिकार की हड्डी दी जाती थी। वह हड्डी बघेरे की होती थी । निर्मल चाँदनी में लोगों की भीड़ के बीच में बघेरे की खाल पर रखी वह चमक रही थी और लोगों को पता न था कि वह सूतो को दी जायगी या बनक को ।

फ्राँसीसी अफसर ने कहा, “ और किसी को तो कुछ नहीं कहना है । "

बनक ने उच्च स्वर में कहा, “सूतो तो आधा ही आदमी है और अधिकार हड्डी पाने के वह योग्य नहीं है। मैं अपना एक हाथ अपनी बगल से बाँध लूँगा और उसके साथ एक ही हाथ से खंजर से लड़ने को तैयार हूँ ।" क्रोध से सूतो भन्ना गया। उछलकर खड़े होकर उसने नीचे की ओर देखा और बनक से कहा, “अबे सूअर ! तेरी बात में सुन रहा हूँ। तू अपने दोनों हाथ खुले रख और मुझसे लड़, और मुझे देखना है तू कैसे जीतता है ! "

अन्य योद्धाओं और भीड़ में उत्तेजना - सी फैली और लोगों को खुशी हुई कि इस प्रकार के निर्णय से उसकी परंपरा कायम रहेगी। फ्राँसीसी कमिशनर ने दोनों सैनिकों को पास बुलाकर खड़ा किया और लोगों से कहा, "नहीं, लड़ाई नहीं होगी। इस तरह खून-खराबी करना ठीक नहीं है। सूतो और बनक दोनों ने ही बहुत साफ बातें कही हैं। परंतु कोरी बातों से काम नहीं चलता और न केवल भाषण देने से ही कोई नायक बन सकता है। ये दोनों खंजर और भाला लेकर जंगल को जायेंगे और अपनी वीरता का प्रमाण देंगे और कल शाम को चंद्रमा के उगने पर वापस आयेंगे और अपने शौर्य का प्रमाण देंगे। तभी यह निर्णय दे दिया जायेगा कि कौन नायक होता है । " दोनोंफ्राँसीसी अफसर अपने कैंप चले गए और उनके चले जाने के बाद शराब का एक दौर और चला ।

बनक ने सूतो से कहा, "इस झंझट में क्यों पड़ता है ? तू मुझसे जीतेगा नहीं। इसलिए कह दे कि तू मेरा प्रतिद्वंद्वी नहीं है । " “हाँ, चाटुकारी और शेखीखोरी में तो नहीं हूँ”- यह कहता हुआ सूतो अपने मकान की ओर चला गया ।

सूतो आदमियों का कुछ खयाल नहीं किया । उसका दिमाग बड़ी तेजी से काम कर रहा था। एक प्रकार से उसका एक ही हाथ था और बनक के दोनों उतने ही तेज थे जितनी उसकी जबान। इसलिए उसकी शौर्य-योजना निर्दोष होनी चाहिए। अपने मकान के भीतर वह घुसा और खूँटियों पर टँगे अपने हथियार- भाले, खंजर और तीर-कमान देखे। वह जानता था कि उसके मकान के पूर्व की ओर को शक्तिशाली सिंह रहते हैं जिनकी गति विद्युत् के समान थी आदमी उस तरफ कभी आते न थे पर आज तो उसको उस ओर जाना ही था, क्योंकि अगर वह किसी सिंह को मार सका और उसकी खाल ला सका तो वह नायक के पद का अधिकारी हो सकेगा । उसे अपने पीछे कुछ आहट - सी मालूम हुई और मुड़कर देखा तो पीछे दरवाजे पर लिरीना खड़ी थी । उसकी आँखें फटी हुई-सी थीं । मुस्कान के स्थान पर उसके चेहरे पर गांभीर्य था । उसने हाथ बढ़ाकर एक पतली जंजीर में बँधा एक क्रास उसकी ओर बढ़ाया और कहा, “इसे पहन लो, यह बड़ा ही शुभ है । "

सूतो मुस्कराया और युवती लिरीना की सरलता से वह बड़ा प्रभावित हुआ। उसने सोचा कि उसका जादू तो खजर की धार है जो दीवार पर लटक रही है। वैसे उसकी कमर में एक जादू का तावीज़ बंधा हुआ था। सूतो ने कहा, “तुम्हारी इस कृपा के लिए धन्यवाद
मुझे इस कृपा की आवश्यकता नहीं है। हो ?”

" वह कुछ रुआँसी-सी हुई और उसने पूछा, “जा कहाँ रहे?”

अपने भाले और खंजर को उतारने को हाथ ऊपर करते सूतो ने रुखाई से कहा, “सिंहों के शिकार के लिए, बस मेरे लिए जीवन का यही एक अवसर है । "

अपने हाथ से अपने होठों को छिपाते हुए चिंता से लिरीना ने कहा, “नहीं, ऐसा करना तो मौत के मुँह में जाना है, क्योंकि वहाँ तो टोलियों में जाकर शिकार खेला जाता है। अकेला आदमी तो सिंहों का शिकार नहीं खेलता।" अविचलित भाव और कड़ाई से सूतो ने कहा, “मैं जाता हूँ और इस प्रकार की बात मैं नहीं सुनना चाहता ।

"कमर में खजर बाँधकर और भाले को जमीन पर घसीटते हुएतथा सीधे हाथ में शिकारी - चाकू लेकर वह लिरीना की ओर मुड़ा और उसने कहा, “मेरे ऊपर विश्वास रखो।"

और वह उसकी बगल में से एक ओर निकल गया मानों वह रात्रि में प्रवेश कर गया हो। जाते में उसने बनक को देखा। वह पहले से ही सुसज्जित था और शिकार को जाने को तैयार था। नक्र-नृत्य करते हुए वह बड़ी शान से कह रहा था कि वह नदी से विशालकाय, सबसे बड़े मगर को मारकर लायेगा और अपने शौर्य का प्रमाण देगा।

सूतो ने गाँव की ओर एक नज़र डाली और फिर वह प्रकृतिपुरुष के समान दौड़ता हुआ आगे बढ़ा और सूर्योदय तक उसने एक सिंह की ठाहर ढूँढ़ ली। एक चटियल मैदान में एक खोखला सा स्थान था। उसने उसे अच्छी तरह देखा। सब मैदान मैदान कमर से ऊँची घास से आच्छादित था। वह धीरे-धीरे रेंग रहा था। शिकार के लिए उसने वह समय इसलिए चुना था कि सिंह और बघेरों में दिननिकलने पर कुछ सुस्ती आ जाती है। हिलती हुई घास की ओर वह धीरे-धीरे बढ़ा। हवा उसकी ओर को नहीं, वरन् उसकी ओर से बह रही थी। पीली घास में वायु के झकोरे लहरें - सी उत्पन्न करते थे मानों घास सजीव होकर सूतो को प्रोत्साहित कर रही हो। सूतो धीरे-धीरे रेंग 1 रहा था। उसके शरीर से पसीना टपक रहा था। उसके होठों का पसीना उसके मुँह में जा रहा था। जैसे ही वह एक उथली नदिया (डठ्ठत्दड्ड) के निकट आया, उसने अपनी गति और धीमी कर दी और उसके किनारे लेटकर उसने चारों ओर देखा।

हवा से झकोरी हुई घास के अतिरिक्त वहाँ कोई और गति न थी। थोड़ी देर वह सुस्ताया और फिर घुटनों और कुहनियों के बल रेंगने लगा। घास को तोड़कर उसे अपने सिर पर ऐसे लगा लिया जिससे ऊपर और बगल से उसका सिर न दिखाई पड़े और वह घास के पूले के समान दिखाई पड़े। पालू के किनारे पर आकर उसने ऊपर से नीचे की ओर देखा। उषाकाल से जिस सिंह की खोज में था, वह वहाँ मौजूद था। पानी के गड्ढे के पास से सिंह के अध-खाए जानवर से उसने उसकी खोज पकड़ी थी। सिंह अकेला था और इसलिए वह अक्कड़ और खतरनाक भी था। सिंह अर्ध- सुषुप्त अवस्था में था। नाखून उसके खुले हुए थे। उसकी जीभ कुत्ते की भांति लटक रही थी और जब कभी मक्खियाँ और कीड़े उसे काटते तब उसकी खाल उस स्थान पर हिल जाती थी। सिंह भयंकर और विशाल था। सूतो को कुछ घबराहट हुई। इतने बड़े सिंह को दोनों

हाथों से मारना मुश्किल था। उसके केश मटमैले, काले और छोटे थे । उसके पेट की बगल में भालों की दो गूथें थीं

सूतो ने भाले को बदला । अपनी पीठ पर होकर निकाला और सीधे हाथ की उँगलियों से उसको पकड़ा। होठों को चबाते हुए

उसने अपनी शक्ति संचित की। टाँगे उसकी धीरे-धीरे पेट के नीचे आयीं। तब वह खड़ा हुआ । शेर को उसने ललकारा और भाला फेंकने के आसन से अपने वृषभ - कंधों की शक्ति के प्रत्येक अंश को एकत्र करके उसने भाला चलाया । वज्र की भांति भाला चौकन्ने शेर की ओर लपका। शक्तिपुंज सिंह एकदम खड़ा हुआ । उसकी पीली आँखों ने भाले और भालेवाले को देखा। उसके पुट्ठे सिकुड़े और धमाके से भाले की चोट हुई । सिंह दहाड़ा और चोट से तिलमिलाकर उसने वेदना की दहाड़ की और वह लोट-पोट होने लगा और भाले पर आक्रमण करने लगा । बाँस के टुकड़े इधर-उधर उछलने लगे । शेर उछलने लगा, पर बिंधे हुए भाले के कारण वह एक ओर को झुका था। घृणा से वह झल्लाया हुआ था । एक ही झपेट में सूतो को मारने के लिए उसने एक प्रयत्न किया । परंतु गर्म खून उसके मुँह से गिरने लगा और एक ओर को गिरकर वह छटपटाने लगा। उसकी आँखें फटने लगीं। पंजे उसके चौड़े हुए, मानों वह अपने शत्रु को पकड़ने की कोशिश में हो ।

सूतो ने गहरी साँस ली और विजय - भावना उसके चेहरे पर अंकित थी। वह नीचे को शेर की ओर को खिसका । भाले को उसने शरीर से खींचा और एक तरफ उसे रख दिया और चाकू से उसने उसके पेट में शिगाफ़ लगाए ताकि उसकी वह खाल निकाल ले, पर उसके पीछे एक छाया-सी मालूम हुई । एक पत्थर का टुकड़ा खिसक पड़ा। उस आवाज की ओर खून से लथ-पथ चाकू को हाथ में लेकर जैसे वह मुड़ा वैसे ही उसने देखा कि एक शेरनी गुफा से उसकी ओर को लपकी । एक पंजे का वार हुआ, उसके वृषभ-कंध में एक चपेट लगी। उसने सँभलने की कोशिश की, अपनी पंगु बाँह के कारण वह तेजी से न उठ सका।

पूँछ को भाले की तरह ऊपर उठाये हुए सिंहनी ने आक्रमण किया अनजान में सूतो चिल्लाया । छाया की भाँति शेरनी उठी । वह मुँह बाए हुए थी । सूतो को मालूम हो गया कि

वह उसका मुकाबला न कर सकेगा। अपने शिकारी चाकू से उसने अपनी रक्षा करनी चाही। वह एक ओर को झुक गया। शेरनी के नाखून उसको फाड़ रहे थे । लुढ़कते हुए भारी पत्थर ने, जो सिंहनी की गति से गतिशील होकर उधर आ गया था, उसकी रक्षा की। क्योंकि उससे सिंहनी के आक्रमण में ढ़िलाई आ गयी । सूतो आगे को गिर गया । बाएँ हाथ से वह उससे चिपटना चाहता था और सीधे हाथ से वह सिंहनी पर वार कर रहा था। उसने अपनी टाँगें शेरनी के पेट में अड़ा दी। शेरनी खड़ी और पीठ के बल गिरी और अपने वज़न से सूतो को उसने अधमरा कर दिया। दो बार चाकू से उसने हमला किया और दो बार उसका चाकू उसकी पसलियों में घुस गया। शेरनी ने अपने आपको - छुड़ाया और अपनी थाप उसके जमाई। सूतो के सामने दुनिया घूमसी रही थी। उसकी आँखों के सामने अंधेरा हो गया। पर उसका चाकू यों ही हवा में वार कर रहा था । उसे सिंहनी दिखाई नहीं पड़ रही थी । उसके सामने अंधेरा - ही - अंधेरा था और फिर वह बेहोश हो गया।

जब उसे चेतना हुई तो उसने आँखें फाड़कर इधर-उधर देखा। कुहनी और घुटनों के बल बैठकर उसने देखा कि सिंहनी कुछ दूर पर मरी पड़ी है और उसकी छाती से माँस के टुकड़े लटक रहे हैं। उसका कंधा फटा हुआ था । सारे शरीर में पीड़ा थी । सूतो ने अपने घाव देखे। काफी दर्द था । उसकी देह में घाव कोई आसान न थे। मूर्छा के बाद उसे उल्लास हुआ। उसने दो सिंह मारे थे। बनक ऐसा काम कभी नहीं कर सकता था । उसने चाकू से सिंह की खाल निकाली और लपेटकर उसे एक ओर रख दिया । तब फिर वह सिंहनीकी खाल निकालने बढ़ा। जैसे ही वह शिगाफ़ लगाना चाहता था उसकी नज़र एक पतली जंजीर में बँधे क्रास की ओर पड़ी। सारा रहस्य उसकी समझ में आ गयी। वह जंजीर लिरीना की थी । उठकर उसने जो देखा तो लिरीना के पते मिले। वह समझ सका कि सिंहनी सिंह से 20 फुट दूर को मरी पड़ी है। अगर लिरीना उसकी सहायता को न आती तो सिंहनी ने उसका काम तमाम कर दिया होता । लिरीना छाया की भाँति उसके पीछे-पीछे आयी थी ।

सूतो को बड़ी लज्जा आयी कि एक स्त्री ने उसकी जान बचायी। उस पर उसे भी क्रोध आया । सिंहनी की खाल निकालकरअफसर बैठे उसे लपेटा और दोनों की खाल लपेटकर अपने गाँव की ओर चला ।

सायंकाल को चंद्रमा के निकलने पर सभा हुई । फ्राँसीसी हुए थे और नायक की नियुक्ति होनी थी। बनक ने एक विशालकाय मगर के पास खड़े होकर कहा, "मैंने इतना बड़ा मगर मारा है जितना बड़ा सूतो ने तो कभी देखा भी न होगा । मैंने एक फन्दा बाएं हाथ में लिया और सीधे में चाकू लेकर पानी में कूद गया । मछली की भांति मैं तैरा । गोते लगाकर और आगे-पीछे होकर मैंने बड़ी चतुराई से मगर के जबड़े में फन्दा डाला । मगर ने भागने की कोशिश की पर मैंने बगल से तैरकर उसका पेट फाड़ दिया। क्रोध से मगर ने नदी को मथ डाला और अपनी पूँछ की मार से उसने मुझे मार ही डाला होता। पर मेरे आक्रमण से वह मर गया और किनारे पर मैं खींच लाया। अपनी डोंगी तब मैंने ली, उसके पेट से अन्तडियाँ निकाली और साफ किया। तब उसमें मैंने सूखी लौकियाँ भरी और पानी में उसे खींच लाया । " बनक ने नाटक-सा करते हुए अपनी बात कही ।

फ्रॉसीसी अफसर ने तब सूतों की ओर संकेत किया। लँगड़ाते हुए उसने सिंह की खाल फटकारते हुए एक ओर रखी । खाल इतनी बड़ी थी कि जमीन से पूरी हटाने पर भी पूरी तौर से वह न दिखा सका। सूतो ने कहा, “मैंने इस सिंह को मारा। बड़ी चालाकी से मैं इसकी खोज करता रहा और एक ही भाले से मैंने इसको मार दिया।” यह कहते हुए उपेक्षा की दृष्टि से उसने खाल एक ओर फेंक दी। लोगों में आश्चर्य की मुद्रा फैल गयी । तब उसने सिंहनी की खाल उठायी। एक दूसरे सिंह की खाल देखकर लोग आश्चर्य चकित रह गए। फ्राँसीसी अफसर ने पूछा, “सूतो ! क्या तुमने एक ही साथ इस जोड़ी को मारा?" सूतो ने कहा, “मैंने सिंहनी को नहीं मारा । ' उत्तेजित होकर लिरीना ने कहा,"नहीं, नहीं। यह झूठ है। इन्होंने ही दोनों को मारा है, एक को भाले को और दूसरे को चाकू से । "

“बोलो मत लिरीना ।” सूतो ने कहा और लिरीना सिसकती और सुबकती रह गयी |

फ्राँसीसी अफसर भोंचक्के से रह गए । उपस्थित योद्धा बेचैन से थे और बनक भी परेशान था ।

फ्राँसीसी अफसर ने कहा, “आखिर यह मामला क्या है ? " सूतो ने उत्तर दिया, “जब मैं सिंह की खाल खींच रहा था, सिंहनी ने मुझ पर हमला किया। मैंने अपने चाकू से उस पर वार किया। पर मैं उसे मार न सका और मैं पीछे को गिर गया और मेरे भाले से मारा। मुझे पता नहीं था कि वह मेरे पीछे पीछे आ रही थी । यह ठीक है कि यदि वह मेरी सहायता को न आयी होती तो मेरा काम तमाम हो गया होता, क्योंकि मेरे एक ही भुजा है !" तब सूतो ने सिंहनी की खाल एक ओर फेंक दी और खून से उसने क्रास को उठा लिया उपस्थित लोगों में कानाफूसी होने लगी। बनक ने सोचा कि ऐसा भी नायक क्या कि जिसकी जान को एक औरत बचाये । फ्राँसीसी कमिशनर ने अंत में कहा, "बनक ने जो काम किया है उसको बहुत कम आदमी कर सकते हैं । हमारा ख्याल है कि सिंह को मारने की अपेक्षा इतने बड़े घडियाल को मारना बहुत कठिन है और अधिकार - हड्डी बनक को मिलनी चाहिए। पर सूतो एक ऐसी बात की है जो कि एक नायक में होनी चाहिए। उसने सत्य और न्याय के लिए अपने आपको अपमानित किया है। उसने यह स्वीकार किया है कि उसके जीवन की रक्षा स्त्री ने की और सचाई एक नायक के बड़प्पन का चिह्न है । सिंह को मारने के साहस की अपेक्षा उसने महत्तम साहस दिखाया है और उसने अधिकार - हड्डी को सचाई की खातिर अपने प्रतिद्वन्द्वी को देने में लज्जा नहीं की। इसलिए मैं अधिकार-हड्डी सूतो को देता हूँ । अब सूतो ही तुम सब लोगों का नायक है और मुझे आशा है कि वह न्याय और बुद्धिमत्ता से शासन करेगा।"

उपस्थित लोगों में स्वीकृति का जय घोष हुआ । बनक ने भी मुस्कराकर अपनी स्वीकृति दे दी। अधिकार - हड्डी को लेकर अधरों पर मुस्कान का भार लिया सूतो चारों ओर भीड़ में घूमा। उसने अपनी माँ को प्रणाम किया और तब वह लिरीना की ओर बढ़ा और कहा, “अब मैं नायक हूँ और

तू चाहती थी मैं नायक बन जाऊँ।" सजल नेत्रों से लिरीना ने अपनी हृदय - भावना प्रकट की। सूतो ने कहा, "अब तो तू मेरे लिए विवाह नृत्य दिखायेगी।"

लिरीना ने मुस्कराकर कुछ कहना चाहा, पर स्नेह और श्रद्धा से वह कुछ न कह सकी और नीची निगाह करके वह तनिक मुस्करायी।

<u>लघु प्रश्न</u>

1. शिकार साहित्य का संक्षिप्त परिचय दीजिए?

उ) शिकार साहित्य उस प्रकार का साहित्य है जिसमें लेखक द्वारा शिकार के समय घटी कई घटनाओं का सजीव चित्रण पाया जाता है। घटनाओं की सजीवता, शिकारी अनुभव, जीवंतता, जीवन और मौत का संघर्ष, रोचकता, उद्वेग एवं पाठक को पकडे रखने की शैली इस साहित्य की विशेषताएँ हैं।

2. पं. श्रीरामशर्मा का परिचय दीजिए।

उ) प्रस्तुत कहानी 'नायक का चुनाव' के लेखक पंडित श्रीरामशर्मा हैं। आप हिन्दी साहित्य में शिकार - साहित्य के लिए प्रसिद्ध हैं । 'जंगल के जीव' आपकी प्रसिद्ध रचना है। प्रस्तुत कहानी फ्रान्सीसी अफ्रिका के एक जंगल से संबंधित है।

3. सूतो कौन है?

उ) सूतो नायक का पुत्र है।

4. बनक कौन है?

उ) बनक सूतो का प्रतिद्वन्द्वी और प्रबल योद्धा है।

5. 'नायक का चुनाव' कहानी की पृष्ठभूमि क्या है?

उ) यह कहानी फ्रांसीसी अफ्रिका के जंगल के गाँव की कहानी है। उस गाँव में जब नायक की मौत हो गयी, तो स्पर्धा में खडे दो महावीरों की यह कहानी है।

संदर्भ सहित व्याख्या :

1. 'सिंहों के शिकार के लिए, बस मेरे लिए जीवन का यही एक अवसर है।'

संदर्भ –

प्रस्तुत गद्यांश शिकार साहित्य से संबंधित 'नायक का चुनाव' नामक कहानी से संकलित है। इसके लेखक पंडित श्रीरामशर्मा हैं। आप हिन्दी साहित्य में शिकार - साहित्य के लिए प्रसिद्ध हैं। 'जंगल के जीव' आपकी प्रसिद्ध रचना है। लेखक ने अफ्रीकी जंगलों में बसे एक गाँव को कहानी की पृष्ठभूमि के रूप में स्वीकार किया। शर्माजी की अन्य कहानियों की भांति यह भी शिकार प्रधान कहानी है। इसमें शिकार की रोचक घटनाओं के साथ-साथ जंगली जाति के लोगों की सत्यनिष्ठा का भी चित्रण मिलता है।

व्याख्या :

फ्रान्सीसी अफ्रिका के एक जंगली गाँव में नायक का देहान्त हो जाता है। नायक के पद के लिए दो लोग स्पर्धा में हैं। एक- दिवंगत नायक का पुत्र सूतो है। उसका प्रतिद्वन्द्वी बनक है। दोनों के लिए फ्रान्सीसी अधिकारी वीरता की परीक्षा रखते हैं। सूतो की प्रेमिका का नाम लिरीना है। परीक्षा में सूतो सिंह को मारना चाहता है। लिरीना उसे रोकती है किन्तु सूतो उसकी बात नहीं मानता। वह कहता है कि यही जिन्दगी में उसका आखिरी मौका है।

विशेषता : इस वाक्य से सूतो की दीक्षा और सत्यनिष्ठा प्रमाणित होती है। यद्यपि वह अपंग है, वह चाहता है कि सत्यता से मुकाबला जीते और अपने सामर्थ्य को निरूपित करे। अफ्रीका का वातावरण कहानी को अत्यंत रोचक बना देता है।

2. 'भाला वज्र की भांति चौकन्ने शेर की ओर लपका।'

संदर्भ –

प्रस्तुत गद्यांश शिकार साहित्य से संबंधित 'नायक का चुनाव' नामक कहानी से संकलित है। इसके लेखक पंडित श्रीरामशर्मा हैं। आप हिन्दी साहित्य में शिकार - साहित्य के लिए प्रसिद्ध हैं । 'जंगल के जीव' आपकी प्रसिद्ध रचना है। लेखक ने अफ्रीकी जंगलों में बसे एक गाँव को कहानी की पृष्ठभूमि के रूप में स्वीकार किया । शर्माजी की अन्य कहानियों की भांति यह भी शिकार प्रधान कहानी है। इसमें शिकार की रोचक घटनाओं के साथ-साथ जंगली जाति के लोगों की सत्यनिष्ठा का भी चित्रण मिलता है।

व्याख्या –

नायक के पद के लिए रखी परीक्षा के अनुसार सूतो सिंहों की खोज करता है और एक शक्तिशाली सिंह को पाता है। उसे मारने के लिए वह बहुत समय तक प्रतीक्षा करता है । फिर अपनी सारी शक्ति भुजा में संचित करके उस पर भाला चलाता है। वह भाला वज्र की भांति शेर की ओर जाता है। इस एक वार मात्र से ही सिंह की हालत खराब हो जाती है और वह गिर जाता है।

विशेषता

शर्माजी की अन्य कहानियों की भांति यह भी शिकार प्रधान कहानी है। इसमें शिकार की रोचक घटनाओं के साथ-साथ जंगली जाति के लोगों की सत्यनिष्ठा का भी चित्रण मिलता है। वातावरण का अत्यंत सहज वर्णन इस कहानी की अन्य विशेषता है। सूतो की भुजशक्ति का इस वाक्य में अद्‌भुत चित्रण मिलता है।

2. 'सूतो ने एक ऐसी बात की है जो कि एक नायक में होनी चाहिए।'

संदर्भ –

प्रस्तुत गद्यांश शिकार साहित्य से संबंधित 'नायक का चुनाव' नामक कहानी से संकलित है। इसके लेखक पंडित श्रीरामशर्मा हैं। आप हिन्दी साहित्य में शिकार - साहित्य के लिए प्रसिद्ध हैं । 'जंगल के जीव' आपकी प्रसिद्ध रचना है। लेखक ने अफ्रीकी जंगलों में बसे एक गाँव को कहानी की पृष्ठभूमि के रूप में स्वीकार किया । शर्माजी की अन्य कहानियों की भांति यह भी शिकार प्रधान कहानी है। इसमें शिकार की रोचक घटनाओं के साथ-साथ जंगली जाति के लोगों की सत्यनिष्ठा का भी चित्रण मिलता है।

व्याख्या –

नायक के पद के लिए रखी परीक्षा के अनुसार सूतो सिंहों की खोज करता है और एक शक्तिशाली सिंह को पाता है । उसे अपने भाले से मारता है और उसकी खाल निकालने के लिए बैठ जाता है। किन्तु पीछे से एक सिंहनी उस पर वार करती है । वह उसका सामना नहीं कर पाता और बेहोश हो जाता है। लिरीना उसे बचाती है । सूतो सबके सामने सच बताता है कि एक स्त्री ने उसे बचाया। अधिकारी लोग उसकी सत्यनिष्ठा से प्रभावित होते हैं और उसीको नायक बनाते हैं।

विशेषता

शर्माजी की अन्य कहानियों की भांति यह भी शिकार प्रधान कहानी है। इसमें शिकार की रोचक घटनाओं के साथ-साथ जंगली जाति के लोगों की सत्यनिष्ठा का भी चित्रण मिलता है।

वातावरण का अत्यंत सहज वर्णन इस कहानी की अन्य विशेषता है। कहानी में बताया गया कि सत्यनिष्ठा और ईमानदारी सच्चे नायक के लक्षण होते हैं।

कहानी का सारांश

प्रस्तुत कहानी 'नायक का चुनाव' के लेखक पंडित श्रीरामशर्मा हैं। आप हिन्दी साहित्य में शिकार- साहित्य के लिए प्रसिद्ध हैं । 'जंगल के जीव' आपकी प्रसिद्ध रचना है। प्रस्तुत कहानी फ्रान्सीसी अफ्रिका के एक जंगल से संबंधित है।

कहानी का आरंभ एक जंगली गाँव के नायक की मौत से होती है । नायक पद के लिए दो लोग स्पर्धा में हैं। एक- दिवंगत नायक का पुत्र सूतो है । वह शक्तिशाली और ईमानदार है किन्तु उसका एक हाथ बेकार है । उसका प्रतिद्वन्द्वी बनक है। वह वाचाल तथा महान योद्धा है । सूतो की प्रेमिका का नाम लिरीना है।

नायक को चुनने का अधिकार फ्रान्सीसी अधिकारियों का है। इसलिए फ्रान्सीसी अधिकारी एक परीक्षा रखते हैं। उस परीक्षा के अनुसार सूतो और बनक- दोनों को जंगल में जाना होगा और अपनी वीरता का प्रमाण उपस्थित करना होगा । सूतो सिंह को मारना चाहता है। लिरीना उसे रोकती है किन्तु सूतो उसकी बात नहीं मानता। वह कहता है कि यही जिन्दगी में उसका आखिरी मौका है। वह सिंह की खोज के लिए जंगल में निकल पड़ता है। एक दिन के अन्वेषण के बाद वह सिंह की ठाहर को पहचानता है। शक्तिशाली सिंह को अपने भाले से एक ही प्रहार से मार देता है। किन्तु पीछे से एक सिंहनी उस पर वार करती है। सूतो उसका सामना नहीं कर पाता और बेहोश हो जाता है। तब लिरीना उसे बचाती है। वह उसका पीछा करती हुई आ रही थी। सूतो होश में आकर सिंहनी का शव देखता है। लिरीना की जंजीर को वहाँ देखकर सूतो

सारा रहस्य समझ लेता है। वह सिंह और सिंहनी की खाल लेकर वापस जाता है। उधर बनक पानी में तैरते हुए एक विशालकाय मगर को मारता है और उसे साथ लाता है।

दोनों वीर अपनी वीरता के प्रमाण उपस्थित करते हैं। सूतो सच बता देता है कि उसने मात्र एक सिंह को मारा। सिंहनी को तो लिरीना ने मारा। फ्रान्सीसी अधिकारी सूतो की सच्चाई पर मुग्ध हो जाते हैं। वे कहते हैं कि बनक ने बड़े साहस का परिचय दिया किन्तु नायक सूतो ही बनेगा। क्योंकि उसने सच्चाई के लिए स्वयं को अपमानित किया। सत्यनिष्ठा उसमें है जो कि एक नायक का लक्षण होता है।

इस कहानी में सत्यनिष्ठा का प्रतिपादन किया गया। शिकार अनुभवों का सजीव चित्रण पाया जाता है। शर्माजी की अन्य कहानियों की भांति यह भी शिकार प्रधान कहानी है। इसमें शिकार की रोचक घटनाओं के साथ-साथ जंगली जाति के लोगों की सत्यनिष्ठा का भी चित्रण मिलता है। वातावरण का अत्यंत सहज वर्णन इस कहानी की अन्य विशेषता है। कहानी में बताया गया कि सत्यनिष्ठा और ईमानदारी सच्चे नायक के लक्षण होते हैं। भाषा अत्यंत सरल और शाली प्रवाहमान है।

पंचम खण्ड

अनुवाद का महत्व

भारत एक बहुभाषी देश है। यहाँ अनेक भाषाएँ बोली जाती है। इन भाषाओं को बोलनेवाले समाजों के बीच में सामंजस्य स्थापित करने एवं भावात्मक एकता बनाये रखने में अनुवाद का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है। हिंदी तो भारत की सामासिक संस्कृति का प्रतीक है और अधिकांश जनता की मातृभाषा भी है। शिक्षा, कानून, प्रशासन, चिकित्सा, वाणिज्य, व्यवसाय, पर्यटन, दूरसंचार आदि अनेक क्षेत्रों में भारतीयों को जोडे रखने में अनुवाद प्रक्रिया का अत्यंत महत्व है। किंतु वास्तविकता की दृष्टि से देखा जाये तो भारतीय जन-भाषाओं में अनुवाद साहित्य का प्रचार-प्रसार कम है। आंकडों के आधार पर कह सकते हैं कि अनुवाद साहित्य में निहित विविध विषयों का प्रचार सामन्य जनों तक इसलिए नहीं पहुंच रहा है क्योंकि उसकी भाषा उनके लिए बोधगम्य नहीं है। अधिकतर वैज्ञानिक साहित्य अंग्रेजी में उपलब्ध है। भारतीय भाषाओं में, विशेषकर हिंदी- जो कि अधिकांश भारतीय जनों की मातृभाषा है- में वैज्ञानिक साहित्य की मात्रा अपेक्षाकृत कम है। इसका कारण है, अनुवाद की प्रक्रिया के प्रति विद्यार्थियों का कम आकर्षण या अरुचि की भावना। किंतु किसी भी देश की प्रगति वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी पर ही टिकी है। ऐसे में उस प्रकार के ज्ञानात्मक साहित्य के प्रचार प्रसार में भारत जैसे देशों की भाषिक विविधता यह एक बडी अड़चन है और अनुवाद के माध्यम से इसका समाधान हो सकता है। किंतु अंग्रेजी अथवा किसी अन्य विदेशी भाषा से अनुवाद हिंदी में करना कदाचित् कठिन है और समस्यापूर्ण भी है। साहित्यिक अनुवाद के विविध पहलुओं पर विमर्श तथा अध्ययन प्रचुर मात्रा में हुआ है किंतु वैज्ञानिक साहित्य से संबंधित अनुवाद पर अध्ययन कम ही हुआ है। हिंदी की साहित्यिक परंपराएँ भी बहुत विविध हैं। वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, गीता, और पुराण हिंदी साहित्य के प्रमुख स्रोत हैं। इनके अलावा, भक्ति-काव्य, रसिक और सूफी साहित्य भी हिंदी की समृद्ध परंपराओं में शामिल हैं। ये सभी स्रोत हिंदी भाषा की गहरी संस्कृति और विचारधारा को प्रकट करते हैं। इन सभी में अनुवाद की आवश्यकता है।

अनुवाद की परिभाषा एवं उसका स्वरूप

अनुवाद का शब्द संस्कृत में 'प्राप्तस्य पुनः कथनम्' के रूप में पाया जाता है। अर्थ यह है कि पहले कहे गये अर्थ को फिर से कहना ही अनुवाद है। प्राचीन भारत में गुरुके द्वारा कहे गये कथन का शिष्य पुनःकथन करके विषय का स्मरण करता था, यही अनुवाद का प्रारंभिक रूप है। अनुवाद शब्द का संबंध 'वद' धातु से है जिसका अर्थ है 'बोलना' अथवा 'कहना' है। अनुवाद के 'अनु' और 'वद' का प्रयोग वेद में भी मिलता है। ऋग्वेद में 'अन्वेका वदतियद्दाति' नामक पद है। यहाँ भी अनुवाद का अर्थ दुहराना अथवा 'बाद में कहना' ही है। बृहदारण्यकोपनिषद में भी 'अनुवादित' का प्रयोग 'दुहराने' के अर्थ में किया गया है। निरुक्त में अनुवादक का प्रयोग 'कहना' और 'ज्ञान को कहने' के अर्थ में मिलता है। पाणिनि के 'अष्टाध्यायी' ग्रंथ में अनुवाद शब्द का प्रयोग 'ज्ञात बात को कहना' या 'ज्ञात को कहने' के अर्थ में किया गया है। अंग्रेजी में अनुवाद के लिए जो 'ट्रांसलेशन' शब्द का उपयोग किया जा रहा है, उसका भी लगभग यही अर्थ निकलता है जैसे, 'एक भाषा के पाठ में व्यक्त अर्थ को दूसरी भाषा में ले जाना' ही ट्रांसलेशन है।

अनुवाद की परिभाषा :

अनुवाद की परिभाषाओं पर दृष्टिपात करें तो पता चलता है कि अनुवाद को कई विद्वानों ने प्रतीकांतर माना है। डॉ. भोलानाथ तिवारी के शब्दों में कहें तो "एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में यथासंभव समान और सहजरूप से अभिव्यक्त करने का प्रयास अनुवाद माना जाता है।" (अनुवाद विज्ञान : डॉ. भोलानाथ तिवारी)

भारत सरकार की 'विधि शब्दावली' में अनुवाद का अर्थ 'भाषांतर करना' बताया गया है। (To turn into another Language- विधि शब्दावली- भारत सरकार) इसका तात्पर्य यह है कि किसी एक भाषा की रचना को दूसरी भाषा में मूल लेखक के भावों और विचारों को परिवर्तित किये बिना प्रस्तुत करना ही अनुवाद है।

हिंदी की प्रसिद्ध कवइत्री महादेवी वर्मा ने अनुवाद के संबंध में कहा: "भाषा विचारों और मनोभावों का परिधान है और इस दृष्टि से एक विचारक या कवि की उपल्ब्धियाँ जिस भाषा में व्यक्त हुई हैं, उनसे उन्हें दूसरी वेशभूषा में लाना असंभव नहीं तो दुष्कर अवश्य रहता है।"

(सप्तपर्णा में 'अपनी बात' से: महादेवी वर्मा)

शाम्यूल जॉनसन ने अनुवाद को परिभाषित करते हुए कहा- 'एक भाषा से दूसरी भाषा में प्रस्तुत करना, अर्थ को बदले बिना दूसरी भाषा में परिवर्तित करना अनुवाद है।'
(To Interpret in another Language: to change into another language. Relating the sense – A Dictionary of English Language, Samuel Johnson- Times Borks, London)

प्रमुख पाश्चात्य विद्वान मैथ्यू आर्नाल्ड के विचार में अनुवाद का "जिस प्रकार मूल रचना का प्रभाव उसके पाठकों पर पडता है, ठीक उसी प्रकार का प्रभाव अनुवाद के पाठक पर भी पडना अत्यंत आवश्यक है।" (A translation should affect us in the sameway as the original may supposed to have affected it's first reader- Mathew Arnold)

उसी प्रकार वेबस्टर शब्दकोश में अनुवाद की परिभाषा इस प्रकार दी गयी : 'एक भाषा से दूसरी भाषा में प्रस्तुतीकरण की प्रणाली ही अनुवाद है। यह ऐसी कला है, जिसमें भिन्न पृष्ठभूमिवाले पाठकों के लिए किसी रचना को किसी ओर भाषा में पुनः लिखा जाता है।'
(Translation is a rendering from one language or representational system into another. Translation is an art that involves the recreation of a work in another language for reader with a different background- Webster's IIIrd new International Dictionary, Ed. Philip Bab. Gove pp 24)

अनुवाद की प्रक्रिया :

अनुवाद भाषिक व्यवस्थाओं से संबंध रखनेवाली एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें स्रोत भाषा के पाठ से संबंधित भाषिक व्यवस्थाओं का अंतरण लक्ष्यभाषा की व्यवस्थाओं में संपन्न किया जाता है। भाषा अपने आप में अनेक व्यवस्थाओं का समाहार है।

क) ध्वनि व्यव्स्था

ख) रूप व्यवस्था

ग) अर्थ व्यवस्था

घ) वाक्य व्यवस्था

ङ) लेखिम व्यवस्था

किसी भाषा में अभिव्यक्ति इन पाँचों से प्रभावित होती है और उनका सही रूप में ज्ञान प्राप्त करके ही अनुवाद की प्रक्रिया संपन्न होती है। भाषा से संबंध न रखनेवाले सांस्कृतिक, सामाजिक, भौगोलिक, भौतिक एवं धार्मिक व्यवस्थाओं को भी अनुवाद की प्रक्रिया में ध्यान में लेना पड़ता है और इनके सम्यक अवबोध से ही अनुवाद की प्रक्रिया सफल मानी जाती है।

अनुवाद के प्रकार

यद्यपि अनुवाद के कई प्रकार बनते हैं, तथापि मुख्य तौर पर अनुवाद के दो प्रकार बताये जा सकते हैं यथा – शैलीपरक अनुवाद और तथ्यपरक अनुवाद। यहाँ शैली का अर्थ है- अभिव्यंजना अथवा अभिव्यक्ति की शैली। यहाँ विषय प्रस्तुतीकरण पर अत्यधिक जोर दिया जाता है। इसके अलावा विषय अथवा तथ्यात्मक सूचना से संबंधित साहित्य का अनुवाद दूसरा प्रकार है जिसमें बल विषय के प्रस्तुतीकरण पर न होकर विषय पर दिया जाता है। विषय को आधार बनाकर जो अनुवाद किया जाता है, उसकी चर्चा आगे इसप्रकार की जा सकती है:

साहित्यिक और साहित्येतर अनुवाद का स्वरूप :

किसी एक भाषा में अभिव्यक्त भावों और विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करने की प्रक्रिया का नाम ही अनुवाद है। इस प्रक्रिया में पहली अथवा मूल भाषा को 'स्रोतभाषा' कहते हैं तो दूसरी को 'लक्ष्यभाषा' की संज्ञा दी जाती है। विषय को स्रोतभाषा से लक्ष्यभाषा में 'यथासंभव समानरूप में और सहज अभिव्यक्ति' के साथ ले जाना उत्तम अनुवाद कहलाता है। किसी भी ज्ञान का प्रचार-प्रसार सारे जनों तक पहुँचाने में अनुवाद अहम भूमिका निभाता है। विश्व की प्रगति मानवीय ज्ञानराशि के आदान प्रदान के माध्यम से ही संभव हो पा रही है और इसी बिंदु पर अनुवाद का विशेष महत्व उभरकर सामने आता है। क्योंकि किसी देश अथवा समाज में प्रतिफलित उच्चकोटि के भावों अथवा विचारों को विश्वव्याप्त बनाने में अनुवाद ही प्रचारक तथा प्रसारक का काम करता है। उच्चकोटि की हृदयगत भावनाओं का प्रतिफलन यदि 'साहित्य' है तो उच्चकोटि के तर्कपूर्ण विचारों का प्रतिफलन 'विज्ञान' कहला सकता है। अतः अनुवाद को भी विषय के आधार पर 'साहित्यिक अनुवाद' तथा 'साहित्येतर अनुवाद' के रूप में विभाजित किया जा सकता है। इस विभाजन में विज्ञान से संबंधित अनुवाद (या वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद) साहित्येतर अनुवाद की कोटि में आता है। इस प्रकार वैज्ञानिक अनुवाद

और साहित्यिक अनुवाद एक स्पष्ट रेखा खींची जा सकती है। इसी अंतर को 'सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद' अथवा 'सूचनात्मक साहित्य का अनुवाद' भी कहा जा सकता है।

साहित्यिक अनुवाद के प्रकार :

साहित्यिक अनुवाद का वर्गीकरण मुख्यतः गद्य और पद्य के आधार पर और गौणतः साहित्यिक विधाओं के आधार पर किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त अनुवाद के स्वरूप के आधार पर यह वर्गीकरण हो सकता है। विधाओं के आधार पर किया गया अनुवाद काव्यानुवाद, नाटकानुवाद, कथानुवाद- (जिसमें कहानी और उपन्यास दोनों सम्मिलित हैं), एकांकी, निबंध, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, रेखासाहित्य, डायरी, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा, पत्र-साहित्य इत्यादि विविध गद्यविधाओं का अनुवाद साहित्यिक अनुवाद के अंतर्गत माना जाता है। विश्वसाहित्य में आज तक जितने महान साहित्यकार हुए हैं, उनकी रचनाओं की विश्वव्याप्तता का कारण उतने ही समर्थ अनुवादक हैं। उनकी प्रतिभा ही कारण है कि मूल कृतियों के अनुवाद विविध भाषाओं में प्रवेश कर, अपना महत्व स्थापित करने में समर्थ हुए। उदाहरणार्थ विश्व का प्राचीनतम साहित्य ऋग्वेद से लेकर, प्रेमचंद, तोलस्तोय, रबीन्द्रनाथ टैगोर, विलियम शेक्सपियर इत्यादि आधुनिक महान साहित्यकारों की सभी रचनाएँ विश्व की कई भाषाओं में अनुवादों के माध्यम से ही प्रसिद्ध हैं। अतः कहा जा सकता है कि विश्व में साहित्य को परिव्याप्त करने में अनुवाद की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आधुनिक नवजागरण के संदर्भ में फ्रांसीसी, जर्मन, रूसी इत्यादि भाषाओं में रचित यूरोपीय लेखकों की रचनाओं को भारत की जनता ने अपनी भारतीय भाषाओं में पढा तो इसका कारण अनुवाद ही है।

अनुवाद की प्रकृति के आधार पर अनुवाद के प्रकार :

अनुवाद की प्रकृति के आधार पर मूलनिष्ठ अनुवाद, मूलमुक्त अनुवाद, शब्दानुवाद, छायानुवाद, भावानुवाद, सारानुवाद, टीकानुवाद, वार्तानुवाद इत्यादि कतिपय भेद हो सकते हैं। अनुवाद को

यथासाध्य कथ्य और कथन पद्धति दोनों दृष्टियों से मूल के निकट रखने का अनुवाद मूलनिष्ठ अनुवाद है। लक्ष्यभाषा की सुविधा के अनुरूप उद्देश्य के अनुसार कतिपय परिवर्तन करते हुए किया गया अनुवाद मूलमुक्त अनुवाद है। इसमें विषय को बोधगम्य बनाने की दृष्टि से देश-काल-वातावरण तथा पात्रों के नाम इत्यादि का भी किंचित् परिवर्तन किया जा सकता है। स्त्रोत अथवा लक्ष्यभाषा प्रकृति को ध्यान में न रखते हुए कथ्य के हर एक शब्द का उसी तर्ज पर अनुवाद करना 'शब्दानुवाद' है। यह अनुवाद कोशनिर्माण में, वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद के समय पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण करने में अधिक उचित होगा। विधिसाहित्य के अनुवाद को तो शब्दानुवाद ही माना जा सकता है। स्त्रोतसामग्री के मूलभाव को ग्रहण करके स्वतंत्र रचना करना ही 'छायानुवाद' है। हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार जैनेंद्र ने रूसी कथाकार तोलस्तोय की कहानियों का इसी शैली में अनुवाद किया है। इनके अलावा 'भावानुवाद' एक प्रकार है जिसमें मूल भाषा की अपेक्षा मूलकृति का भाव ही ज्यादा महत्व रखता है। अनुवाद के प्रकारों में 'सारानुवाद' भी एक है जो मूलमुक्त अनुवाद है। राजनैतिक व्याख्यान, लंबे भाषण, प्रवचन, किसी कंपनी अथवा उद्योग आदि के वार्षिक प्रतिवेदन इत्यादि के अनुवाद के संबंध में सारानुवाद ही उपयुक्त माना जाता है। पत्रिकाओं के समाचार प्रकाशन हेतु यही अनुवाद अपनाया जाता है। समय तथा प्रकाशन-स्थल इत्यादि को ध्यान में रखते हुए अनुवाद के किसी भी प्रकार को अपनाया जा सकता है।

साहित्येतर अनुवाद का स्वरूप :

साहित्येतर अनुवाद में भावानुप्रवेश की भूमिका गौण और विषयानुप्रवेश की भूमिका मुख्य होती है। क्योंकि साहित्येतर विषयों में भावना की जगह विषय का महत्व होता है। अतः इसे सूचनात्मक साहित्य कहना उचित है। जैसा कि हमने पहले ही सूचित किया, सूचनात्मक साहित्य और सृजनात्मक साहित्य में उतना ही अंतर है जितना अंतर मस्तिष्क और हृदय में

होता है। सूचनात्मक साहित्य में कई प्रकार के विषय आते हैं जैसे कि, मीडिया का साहित्य, पत्रकारिता का साहित्य, सूचना और समाचार साहित्य, संचार और जनसंचार माध्यमों का साहित्य, इलैक्ट्रानिक जनमाध्यमों का साहित्य, रिपोर्ताज, वैज्ञानिक साहित्य इत्यादि। आज हम इस स्थिति को प्राप्त हो गये हैं कि अनुवाद के बिना सूचना का अर्थ ही नहीं रह गया है, और समाचार की क्रांति पंगु बन जायेगी। क्योंकि देश-विदेशों में भिन्न-भिन्न भाषाई समाजों में घटित विविध प्रकार के समाचार सूत्रों का अनुवाद करके ही हम अपनी सुविधा के अनुसार अपनी भाषाओं में उक्त समाचार को प्राप्त कर रहे हैं। भारत का उदाहरण ही लें तो भारत में प्रचलित अनेक भाषाओं के मातृभाषी जन अनुवाद के माध्यम से समाचार का पारस्परिक आदान-प्रदान कर रहे हैं। वाणिज्य, व्यापार, शेयर बाजार, विपणन, विज्ञापन, वस्तु-विनिमय, अचल संपत्ति (रियल एस्टेट्), विपणन, क्रय-विक्रय, बैंकिंग, चिकित्सा, आध्यात्मिकता, यात्रा इत्यादि कई ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें अनुवाद के बिना कार्य चलना संभव ही नहीं है। इनके अतिरिक्त विधि साहित्य, इतिहास और पुरातत्त्वशास्त्र से संबंधित साहित्य, सांस्कृतिक साहित्य इत्यादि भी साहित्येतर विषयों में आते हैं।

*****